विषय-सूची

Semester-I

समाजशास्त्र

[EXPLORING SOCIOLOGY]

अध्याय		पृष्ठ
1.	समाजशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र, वैश्विक समाजशास्त्र का इतिहास और विकास, भारतीय समाजशास्त्र का इतिहास एवं विकास, सांस्कृतिक नृवंशविज्ञान/नृजाति वृत्तांत [SOCIOLOGY AND PHILOSOPHY, HISTORY AND DEVELOPMENT OF GLOBAL SOCIOLOGY, HISTORY AND DEVELOPMENT OF INDIAN SOCIOLOGY, CULTURAL ETHNOGRAPHY]	3
2.	समाजशास्त्र और अन्य सामाजिक विज्ञान [SOCIOLOGY AND OTHER SOCIAL SCIENCES]	18
3.	समाजशास्त्र के उद्देश्य : सार्वजनिक समाजशास्त्र, उग्रवादी/विवेचनात्मक समाजशास्त्र, नव समाजशास्त्र [PURPOSES OF SOCIOLOGY : PUBLIC SOCIOLOGY, RADICAL/CRITICAL SOCIOLOGY, NEW SOCIOLOGY]	27
4.	एक पेशे के रूप में समाजशास्त्र [SOCIOLOGY AS A PROFESSION]	36
5.	समाजशास्त्र की भूमिका एवं महत्व [ROLE AND IMPORTANCE OF SOCIOLOGY]	40
6.	समाजशास्त्रीय पद्धतियां (ऐतिहासिक, उद्‌विकासीय, तुलनात्मक एवं आनुभविक) [SOCIOLOGICAL METHODS (HISTORICAL, EVOLUTIONARY, COMPARATIVE AND EMPIRICAL)]	45
7.	समाज [SOCIETY]	60
8.	समाज और समाज की टाइपोलॉजी : हर्बर्ट स्पेन्सर, इमाइल दुर्खीम और कार्ल मार्क्स [THE SOCIETY AND TYPOLOGY OF SOCIETY : HERBERT SPENCER, EMILE DURKHEIM AND KARL MARX]	70
9.	समुदाय [COMMUNITY]	74
10.	गैमिनशाफ्ट, गैसेलशाफ्ट, कल्पित समुदाय तथा आभासी समाज [GEMEINSCHAFT, GESELLSCHAFT, IMAGINED COMMUNITY AND VIRTUAL SOCIETY]	79

समाजशास्त्र में मूलभूत अवधारणाएं
[BASIC CONCEPTS IN SOCIOLOGY]

1. सामाजिक संरचना 3
[SOCIAL STRUCTURE]
2. संस्था 11
[INSTITUTION]
3. सामाजिक व्यवस्था 19
[SOCIAL SYSTEM]
4. सामाजिक समूह 26
[SOCIAL GROUPS]
5. प्रस्थिति तथा भूमिका 43
[STATUS AND ROLE]
6. संस्कृति 54
[CULTURE]
7. सामाजिक प्रतिमान (मानदण्ड) तथा मूल्य 69
[SOCIAL NORMS AND VALUES]
8. समाजीकरण : अवधारणा, संस्थाएं, सिद्धान्त एवं भावना 89
[SOCIALIZATION : CONCEPT, AGENCIES, THEORIES AND INDOCTRINATION]
9. सामाजिक स्तरीकरण : अवधारणा स्वरूप तथा सिद्धान्त 109
[SOCIAL STRATIFICATION : CONCEPT, FORMS AND THEORIES]
10. सामाजिक परिवर्तन का अर्थ 126
[MEANING OF SOCIAL CHANGE]
11. सामाजिक परिवर्तन के प्रकार 136
[TYPES OF SOCIAL CHANGE]
12. सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त 151
[THEORIES OF SOCIAL CHANGE]
13. सामाजिक गतिशीलता : अवधारणा, स्वरूप तथा सिद्धान्त 157
[SOCIAL MOBILITY : CONCEPT, FORMS AND THEORIES]
14. सामाजिक नियन्त्रण : अवधारणा, अभिकरण, घटक 167
[SOCIAL CONTROL : CONCEPT, FACTOR, AGENCIES]
15. सामाजिक नियन्त्रण के सिद्धान्त 186
[THEORIES OF SOCIAL CONTROL]
16. सामाजिक अन्तःक्रिया (सहयोगात्मक सामाजिक प्रक्रियाएं, सहयोग, एकीकरण, समायोजन, आत्मसात एवं पर-संस्कृतिग्रहण) 191
[SOCIAL INTERACTION (ASSOCIATIVE SOCIAL PROCESSES, CO-OPERATION, INTEGRATION, ACCOMMODATION, ASSIMILATION AND ACCULTURATION)]
17. असहयोगात्मक प्रक्रियाएं (प्रतिस्पर्द्धा, संघर्ष एवं प्रतिकूलन) 211
[DISSOCIATIVE PROCESSES (COMPETITION, CONFLICT AND CONTRAVENTION)]

Subject

Date : __/__/__

समाजशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र

समाजशास्त्र और दार्शनिक दर्शनशास्त्र एक - दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बंधित है।

सेलर्स के अनुसार :-

दर्शनशास्त्र एक व्यवस्थित विचार या चिन्तन के माध्यम से संसार और मनुष्य की प्रकृति के बारे में पूरी जानकारी व प्राप्त करने का लगातार प्रयास करते है। इस प्रकार दर्शनशास्त्र संसार और मनुष्य की प्रकृति दर्शनशास्त्र को समझने का एक प्रयत्न करते है। और इस प्रयत्न में समाजशास्त्र का भी काफी योगदान होता है। दर्शनशास्त्र में तर्क एवं कल्पना का प्रमुख रूप सहारा लिया जाता है। तर्क एवं कल्पना के आधार पर ही जनरीतियां, प्रथाओं, रूढ़ियों, व परम्पराओं का विकास हुआ। इन सब का अध्ययन समाजशास्त्र करता है।

दर्शनशास्त्र सामाजिक आदर्शों एवं मूल्यों का अध्ययन करता है समाजशास्त्र इनका अध्ययन सामाजिक पृष्ठभूमि में करता है, समाजशास्त्र सामाजिक आदर्श एवं मूल्य को ध्यान में रखकर ही समूह या समाज में व्यक्ति के व्यवहार का मूल्यांकन करता है।

मैकाइवर के अनुसार :-

समाजशास्त्र में सामाजिक मूल्य के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि बिना मूल्य के समाज को नहीं समझा जा सकता। समाजशास्त्र का दृष्टिकोण वैज्ञानिक होने के साथ कल्याणकारी भी होता है उसे स्वनोमुखी कहा जाता है।

किलफोर्ड के अनुसार :- नृवंश विज्ञान को एक संस्कृति

Subject ______ Date: __/__/____

के मोटे विवरण के रूप मे परिभाषित किया। इसमे संस्कृति के प्रथाओ और मान्यताओ को गहराई से समझना और प्रतीको को व्याख्या करने पर बल दिया है।

* नृवंश विज्ञान के प्रकार :-

(i) सांस्कृतिक नृवंश विज्ञान :-

इसमे किसी विशेष संस्कृति या समुदायो का अध्ययन किया जाता है इसका उद्देश्य लोगो के विशिष्ट समूह के रीति-रिवाज परम्परागो विश्वास प्रथा का विस्तृत विवरण और विश्लेषण करता है।

(ii) ऐतिहासिक नृवंश विज्ञान :-

इसमे ऐतिहासिक विश्लेषण के साथ नृवंश विज्ञान अनुसंधान को जोडना है, इसमें शोधकर्ता क्षेत्रीय कार्य करने के अतिरिक्त ऐतिहासिक अभिलेखो दस्तावेजों, कला कृतियो का अध्ययन करके यह जांचते कि समय के साथ संस्कृति या समाज मे बदलाव कैसे आया।

(iii) चिकित्सा नृवंश विज्ञान :-

इसमे चिकित्सा के क्षेत्र मे गुणात्मक अध्ययन करने के लिए उपयोग मे लाया जाता है। रोगियो के व्यवहार एवं चिकित्सा पद्धति का अध्ययन इसके अन्तर्गत किया जाता है। रोगियो के सम्पूर्ण अनुभव के बारे मे महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर समस्याओ के निवारण हेतु सम्पूर्ण कदम उठाये जा सकेंगे।

Subject ____ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

शैक्षिक नृवंश विज्ञान :– इसके अन्तर्गत सीखने व सिखाने के तरीकों का निरक्षण किया जाता है शोधकर्ता शैक्षिक प्रेणाओं सिखने के स्वभाव और छात्र व्यवहार व दृष्टि कोणु का अध्ययन करता है इस प्रकार के अध्ययनों कि सहायता से । शिक्षा के क्षेत्र में अच्छे परिणाम व शैक्षिक व्यवस्था में सुधार किया जा सकता है।

व्यवसाय नृवंश विज्ञान :- इसमे लोगो के बाजार लक्ष्य एवं उपभोक्ता को समझने का प्रयास किया जाता है इसमे नृवंश, विज्ञान व्यक्ति बाजार मांगो का पता लगाने मे सफल हो जाता है इस प्रकार के अध्ययन से व्यवसाय संगठन अपने ग्राहको कि जरूतो व आवश्यकता को पहचान कर अपने उत्पादों का निर्माण एवं उनमें परिवर्तन कर सकते है।

Q.1 समाज शास्त्र को परिभाषित कीजिए समाजशास्त्र के क्षेत्र व विषयवस्तु कि विवेचना कीजिए।

उत्तर परिभाषा :- अधिकतर समाजशास्त्री यह स्वीकार करते है समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है परन्तु फिर भी उन सभी के दृष्टिकोण में समानता नही है विभिन्न समाजशास्त्री ने भिन्न-भिन्न प्रकार से समाज शास्त्र कि परिभाषा चार धारों पर दि गई है।

1. समाज के अध्ययन के रूप में समाजशास्त्र :- इसके अन्तर्गत वह समाज शास्त्री है जो समाजशास्त्र को समाज का विज्ञान मानते है उनके अनुसार समाज शास्त्र पूर्ण समाज शास्त्र एक समूह (व्यापक) इकाई के रूप में है क्रमबद्ध अध्ययन करता है।

Subject ______ Date : __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

→ गिडिंग्स के अनुसार :-
समाज शास्त्र व्यापक रूप है समाज का व्यवस्थित वर्णन एवं व्याख्या है।

→ ओडम के अनुसार :-
समाज शास्त्र वह विज्ञान है जो समाज का अध्ययन करता है।

→ गिन्स बर्ग के अनुसार :-
समाज शास्त्र समाज के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

– उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि समाज शास्त्र समाज का अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से करता है।

समाज शास्त्र का उद्देश्य :-
समाजशास्त्र का उद्देश्य समाज के इसी एक अंग का अध्ययन करना नहीं बल्कि इसमें सम्पूर्ण समाज को एक इकाई मानकर अध्ययन किया जाता है समाजशास्त्र समाज में निहित आन्तरिक सम्बन्धों संस्थाओं एवं मानव समाज का अध्ययन करने वाला विज्ञान इसका उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था और दुव्यवस्था कि व्याख्या करना है। समाजशास्त्र केवल हमारे ज्ञान में वृद्धि नहीं करता बल्कि सामाजिक घटनाओं का विस्तृत अध्ययन करने में भी हमारी मदद करता है। सम्पूर्ण समाज का व्यवस्थित अध्ययन इसके अन्तर्गत किया जाता है। अतः समाज शास्त्र का मुख्य उद्देश्य भारतीय समाज कि संरचना संघटन विकास और चुनौतियों का अध्ययन करके समाज में सुधार करने के लिए विज्ञान के रूप में ज्ञान प्रदान करना होता है।

Subject ______ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

समाज की संरचना का अध्ययन :-

समाज शास्त्र कि शाखा सामाजिक आकृति विज्ञान, समाज कि आकृति, स्वरूप या आकार को प्रभावित करने वाले विशेषताओं का अध्ययन करते है इसमें जनसंख्या के गुण, आकार, सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक स्वरूप आदि का अध्ययन किया जाता है। जो सामाजिक संरचना का निर्माण करता है।

सामाजिक प्रक्रियाओं समस्याओ का अध्ययन :-

समाज शास्त्र मे विद्यमान सामाजिक समस्याओं जैसे - जातिवाद, बालविवाह का पराद, आत्महत्या, दहेज, निर्धनता, आदि का अध्ययन करता है तथा इन समस्याओ के समाधान हेतु मार्ग दर्शन प्रदान करता है।

सामाजिक प्रक्रियाओ का अध्ययन :-

विभिन्न सामाजिक प्रक्रिया जैसे - संयोग, संघर्ष, प्रतिस्पर्धा, प्रभुत्व, आदि का अध्ययन किया जाता है जो विभिन्न समूह और विभिन्न व्यक्तियो मे पाया जाता है

सामाजिक नियन्त्र एवं व्यवस्था का अध्ययन :-

इसके अन्तर्गत सामाजिक नियन्त्रण एवं व्यवस्था सम्बन्धित विषय जैसे - रीतिरिवाज, प्रथा, परम्परा, कानून, धर्म, जननीतिया आदि का अध्ययन किया जाता है

Subject ______ Date : __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

गिन्सबर्ग के अनुसार :-

सामाजिक जीवन और व्यवस्था के लिए सामाजिक नियन्त्रण अतिआवश्यक है यह व्यक्तिगत और सामाजिक संगठन कि विभिन्न क्रिया और संरचनाओं का अध्ययन करता है जैसे - परिवार, धर्म, समाज और राजनीति।

सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन :-

समाजशास्त्र विभिन्न समय काल एवं परिस्थिति समाज में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करता है जैसे - तकनीकी, आर्थिक, धार्मिक और सामाजिक संस्कृति परिवर्तन आदि इन परिवर्तनों का अध्ययन कर समाज कि व्याख्या कि जाती है।

- संक्षेप में स्पष्ट है कि समाज शास्त्र का उद्देश्य समाज के विभिन्न पहलुओं को समझना और समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करना है ताकि समाज का सुधार एवं विकास हो सके

Subject ______ Date: __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

Topic :- सार्वजनिक समाजवाद

- अमेरिकन सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन :-

- सार्वजनिक समाजवाद को सर्वप्रथम हर्बट जे. गेन्स 1988 में ASA के अध्ययन सम्बोधन अमेरिका में समाजशास्त्र अनुष्ठान जनता में प्रयुक्त किया था। अहबर्ट जे. ने सार्वजनिक समाजवाद शब्द का प्रयोग किया जो आगे चलकर एक केन्द्र बिंदु बन गया। इसके पश्चात समाज शास्त्री बेनएगर ने पब्लिक सोशियोलॉजी फ्रॉम सोशल फैक्ट्स टू लिटरेरी एक्टस नामक पुस्तक लिखी जिसमें एक ऐसे समाज शास्त्र के बारे में बताया जो प्रमुख सार्वजनिक मुद्दों को सम्बोधित करता हो समाज शास्त्र क्या है और इसके लक्ष्य क्या होने चाहिए इसके बारे में गहरा अध्ययन किया है। संक्षेप में सार्वजनिक समाजवाद एक समाज शास्त्रीय प्रयास है जो समाजशास्त्र सूझान्ति और व्यवहारिक ज्ञान को सार्वजनिक जीवन में लागू करने का प्रयास करता है।

Q.1 उग्रवादी समाजवाद व विवेचनात्मक समाजवाद कि व्याख्या करें

Q.2 नव समाजवादी कि अवधारणा कि विवेचना करो?

Subject

Date : __/__/__

MON TUE WED THR FRI SAT SUN

Topic

एक व्यवसायिक रूप मे समाजशास्त्र

एलेक्स इंकेल्स के अनुसार :- समाजशास्त्र एक मौलिक ज्ञान नहीं बल्कि अपने आप में एक व्यवसाय भी है। ज्ञान और व्यवसाय के अन्तर को स्पष्ट करते हुए उन्होंने एक व्यवसाय के रूप में समाजशास्त्र कि उपयोगिता एवं अलग-अलग व्यवस्था मे इसके प्रयोग को स्पष्ट किया है इंकेल्स मे लिखा है कि जब हम ज्ञान कि किसी शाखा को एक बौद्धिक विशय के रूप में देखते है तो हमारा तात्पर्य केवल उन विचारो एवं सिद्धान्तो से होता है जिनके आधार पर उसे दूसरे विज्ञानो से अलग किया जा सकता है। इसके साथ ही बौद्धिक ज्ञान का सम्बन्ध तथ्यो को एकत्रित करने के लिए विभिन्न तरीको और उन्हे उपयोग मे लाने के तरीको से भी होता है, जब हम किसी व्यवसाय कि बात करते है तब हमारा तात्पर्य ज्ञान कि किसी शाखा का विभिन्न क्षेत्रो मे उपयोग करने से होता है किसी विषय के व्यवसाय के रूप मे समाजशास्त्र को ज्ञान कि उपयोगिता शाखा कहा जा सकता है वर्तमान समाज मे समाजशास्त्र कि व्यवस्था उपयोगिता मे तेजी से वृद्धि हुई है। इसके दूसरे क्षेत्रो के अतिरिक्त समाज कल्याण तथा सामाजिक सुरक्षा से सम्बंधित विभिन्न कार्यो में समाजशास्त्र कि व्यवसायिक उपयोगिता को आज सभी समाजशास्त्री किसी ना किसी रूप में स्वीकार करते है सामाजिक कल्याण तथा सामाजिक सुरक्षा ऐसे विषय है जिनके प्रति सभी कल्याणकारी राज्य आज से पहले कहीं अधिक जागरूक है तथा इनके कार्य क्षेत्र मे निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। इन क्षेत्रो में जहाँ समाज

Subject ________ Date : __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

शास्त्रीय ध्यानों का विषय में विशेष महत्व वही यह क्षेत्र समाजशास्त्र ध्यानों का विषय विशेष का ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों के लिए व्यवसाय रूप से बहोत महत्व पूर्ण है विभिन्न क्षेत्रों में समाजशास्त्र कि व्यवसाय उपयोगिता को समझने से पहले व्यवसाय तथा व्यवसाय शब्दों का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

समाजशास्त्र में व्यवसाय कि उपयोगिता समझने से पहले व्यवसाय तथा व्यवसायिक शब्द के अर्थो को समझना आवश्यक है आक्सफोर्ड डिक्सनरी के अनुसार अंग्रेजी के शब्द Profession तथा व्यवसायिक है (occupation) व्यवसाय जीवन वृत (Career) अथवा कार्य कि दिशा line of luck इसका तात्पर्य है व्यवसायिक अर्थ केवल आर्थिक लाभ के लिए किए जाने वाले कार्य से नही होता बल्कि इसका सम्बन्ध प्रत्येक उस कार्य से है जिसे हम अपनी जीवन वृत Career बनाना चाहते है। अथवा जिसके द्वारा अपने कार्य कि विशेष दिशा का निर्धारण करते है जीवन वृत या कार्य कि दिशा का सम्बन्ध व्यक्ति कि रूची, क्षमता, प्रशिक्षण से होता है।

आक्सफोर्ड डिक्सनरी के अनुसार Profesional किसी भी ऐसे कार्य से है जिसे करने के लिए व्यक्ति अधिकृत हो जिसके लिए वह योग्य हो अथवा विशेष रूप से प्रशिक्षित हो इस प्रकार स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षण, शिक्षण सामाजिक कल्याण तथा सामाजिक सुरक्षा का महत्वपूर्ण प्रशिक्षण है जबकि व्यवसाय उपयोगिता मे बहोत वृद्धि हुई है वर्तमान मे इनसे सम्बन्धित कार्यो को पुरा करना केवल राज्य कि ही जिम्मेदारी नही बल्कि लोगो कि भूमिका महत्व भी बढता है

Subject

जो अलग- अलग क्षेत्रो मे विशेष रूप से योग्य और प्रशिक्षित है

★ विभिन्न व्यवसाय में समाजशास्त्र कि उपयोगिता :-

शिक्षण तथा प्रशिक्षण :- समाजशास्त्र मे प्रशिक्षण सबसे बड़ा हिस्सा शिक्षण जैसे सम्मानित व्यवसाय मे लगा हुआ है। समाज शास्त्रीय व्यवसाय में व्यवसाय की उपयोगिता एक विशेष सेवा अर्पित करने के लिए प्रशिक्षण, दिया जाता है। समाज शास्त्र समाज शास्त्रीयो को प्रशिक्षित करना इसलिए आवश्यक है कि सामाजिक प्रक्रियाओ को समझकर आवश्यकता के अनुसार मानवीय व्यवहार मे परिवर्तन ला सकता है।

अनुसंधान कार्य :- समाज शास्त्र का दूसरा व्यवसाय उपयोग अनुसंधान या शोध के क्षेत्र मे है। सामाजिक नीति का निर्धारण करने अथवा सामाजिक सेवाओ को व्यवहारिक रूप देने के लिए उनसे संबंधित लक्ष्य, साधन तथा उनके प्रभावो को जानना जरूरी है। वर्तमान मे बदलते परिवेश को देखते हुए सामाजिक दशाओ तथा लोगो की रूचियो को देखते हुए यह कार्य केवल सामाजिक शोध की सहायता से किया जा सकता है।

विकास कार्यक्रमों का मूल्यांकन :- विकास कार्यक्रमो का उद्देश्य एक ओर समाज के वंचित समूह कि दशा में सुधार करना होता है। जबकि दूसरी ओर उनके द्वारा समाज में एक ऐसा सन्तुलन विकसित करना होता है जिससे सम्पन्न तथा निर्धन लोगो के बीच कि खाई को कम किया जा सकता है।

Subject ______ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

Ans1 उग्रवादी समाजशास्त्र (Radical sociology)

1960 के बाद अमेरिका मे जिस तरह के समाजशास्त्र का प्रथम विकास हुआ उसमें एक विशिष्ट शाखा उग्रवादी समाजशास्त्र के नाम से जानी गई उसके पूर्व का समाजशास्त्र परम्परागत समाजशास्त्र (Conventional Sociology) के नाम से जाना जाता है। सी राइट मिल्स (C. Wright Mills) द्वारा लिखित पुस्तक सोशियोलॉजिकल इमेजिनेसन मे सर्व प्रथम उग्रवादी समाजशास्त्र का उल्लेख किया गया। 1960 तथा 1970 ई. मे दो दशकों मे समाजशास्त्र में कुल बहुलवादी प्रवृतियो का प्रारम्भ होने लगा। युवा समाजशास्त्रियों ने परम्परागत समाजशास्त्री के स्थापित सिद्धान्तों एवं पद्धतियों कि आलोचना हुई जिसे आमूल परिवर्तनवादी समाजशास्त्री (Radical sociology) कहा जाता है सिंघी 1998 ने इसे उग्रवादी समाजशास्त्री कि संज्ञा दी तथा दोषी - त्रिवेदी 2004 ने इसे अतिवादी समाजशास्त्र कहा और गुल्डनर 1970 ने इसे परावर्ती (Reflexive) समाजशास्त्र कहा उग्रवादी समाजशास्त्र एक परिप्रेक्ष्य है। जिसकी प्रकृति मानवीय गुणो कि व्याख्या करता है पूर्व मे अमेरिका मे संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम (Structural functional approach) था जिसमें यथावत स्थिति का समर्थन किया जाता था वहा क्रान्तिकारी विचारधाराएं विकसित नहीं हो पाई थी। विभिन्न देशो मे आये हुए लोग अमेरिका मे बसे तथा विज्ञान व तकनीकि विकास के माध्यम से वैभव को प्राप्त किया एवं लम्बे अंतराल के बाद अन्त में क्रान्तिकारी विचारधारा का जन्म अमेरिका मे हुआ। इस विचारधारा मे यथावत स्थिति का प्रबल विरोध किया गया तथा समाज को बदलने कि कवायद कि जाने लगी उग्रवादी विचारक समाज

मे शीघ्रतिशील परिवर्तन चाहते थे गुल्डनर (Gouldiner) ने अपनी पुस्तक दी कमिंग क्राइसिज ऑफ वेस्टर्न सोशियोलॉजी (1970) मे बताया कि वह व्यक्ति जो साम्राज्यवाद का विरोधी है युद्ध को बर्बर मानता है एवं जो उत्पीड़न व अत्याचार का विरोधी है उसे उग्रवादी कि सज्ञा दी जाती है। अतः उग्रवादी समाजशास्त्र का उद्देश्य समाज को इस तरह से परिवर्तन करना है जिसमे समानता का विकास हो, शोषण का अन्त हो व वास्तविक स्वतंत्रता में वृद्धि हो हैगडोर्न एवं लेबॉविट्ज (Hagedorh and Cabowitz) ने उग्रवादी समाजशास्त्र को परिभाषित करते हुए बताया कि यह समाजशास्त्र औचित्य एवं नैतिक मूल्यांकन को महत्व देता है तथा दलित एव अन्यतायात (alenated) से जकड़े हुए लोगो के उत्थान के लिए कटिबद्ध है यह स्थापना समाजशास्त्र (Established sociology) का विरोध करता है। वाम पंथी राजनीति अभिमुखन के प्रति कटिबद्ध है एवं संघर्ष के प्रारूप के माध्यम से समाज का विश्लेषण करता है।

उग्रवादी समाजशास्त्र के आधार

- बाह्य सामाजिक तत्व
- आंतरिक शैक्षणिक तत्व

1. बाह्य सामाजिक तत्व :- 20 वी शताब्दी मे विज्ञान और तकनीकि विकास ने सामाजिक जीवन मे अभूतपूर्व परिवर्तन किए जिसके कारण विज्ञान को मनुष्य एव समाज कि प्रगति का मुख्य कारक माना जाने लगा, लेकिन विगत कुछ दशको से विज्ञान

Subject ____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

वाद के विरोध में प्रति संस्कृति का विकास हुआ है।

2 आंतरिक ~~शैक्षि~~ शैक्षणिक तत्व :-

गुल्डनर ने समाजशास्त्र के विकास की व्याख्या करते हुए बताया कि 1950-60 के मध्य समाजशास्त्र लोकप्रिय हो चुका था। समाजशास्त्र की पुस्तकें जनप्रिय साहित्य के रूप में लोकप्रिय हो चुकी थी।

सारांश :-

उग्रवादी समाजशास्त्र एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य है। उग्रवादी समाजशास्त्र परम्परागत व्यवस्था का विरोध है। एवं व्यवस्था में अनेक वर्गों के निहित स्वार्थों का विश्लेषण करते हुए वैकल्पित संरचना के निर्माण अभिरुचि रखता है

विवेचनात्मक समाजशास्त्र

यूरोप में ज्ञानोदय काल के उद्भव के पश्चात सुधारवादियों और मानवादियों ने धार्मिक ग्रन्थों धार्मिक आदेशों की खुली आलोचना प्रारम्भ कर दी।

इस आलोचना को Critic या Critical शब्द से संबोधित किया है।

विवेचनात्मक समाजशास्त्र का उद्भव "फ्रैंकफुर्त स्कूल" से हुआ फ्रैंकफुर्त स्कूल की स्थापना इसलिए की गयी क्योंकि इसके सदस्य क्लासिकल शास्त्री समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों से असंतुष्ट थे तथा वे एक ऐसे समाजशास्त्रीय सिद्धान्त का निर्माण करना चाहते थे।

Subject ____________

MON TUE WED THR FRI SAT SUN

☆ विवेचनात्मक समाजशास्त्र की स्थापना के कारण :-

1) कार्लमार्क्स ने सर्वहारा क्रान्ति के पश्चात् समाजवादी समाज कि भविष्यवाणी की थी, लेकिन इसी समय मैक्स वेबर ने "नौकरशाही का सिद्धान्त" प्रस्तुत किया जो यह मानता था कि आधुनिक समाज मूल रूप से पूंजीवादि समान है।

2) प्रथम विश्व युद्ध से पहले मुसोलिनी ने फासीवाद की स्थापना कि जिसके अनुसार पूंजीवाद मनुष्य का शोषण करता है। इसके अतिरिक्त अन्य कई कारण थे जिसके कारण फ्रैंकफुर्त स्कूल की स्थापना हुई। 1923 में जर्मनी के फ्रैंकफुर्त नगर में फ्रैंकफुर्ट स्कूल की स्थापना हुई।

विवेचनात्मक समाजशास्त्र के विकास का कार्य यूरोप व अमेरिका में दो चरणो में हुआ :-

1) प्रथम चरण :- यह 1932-51 के मध्य का काल है जिसमें जार्ज लुकास नामक सिद्धान्तकार का योगदान उल्लेखनीय है उन्होंने आधुनिक विवेचनात्मक सिद्धान्तों के साथ हीगल, मार्क्स और वेबर को जोड़ा। इसकी प्रमुख कृति है :- "History and Class Consciousness"

2) द्वितीय चरण :- यह 1960 के बाद प्रारम्भ हुआ जिसमे मैक्स होरखीमर तथा थियाडोर एडोर्नो का नाम प्रमुख है इन्होंने लुकाय की कृतियो का विश्लेषण कि।

Subject

निष्कर्ष :-

विवेचनात्मक समाजशास्त्र का प्रमुख उल्लेख समाज में सुधार व समाजवादी बदलाव को प्रोत्साहित करना है। इसका लक्ष्य है समाज के व्यावसायिक और सामाजिक संरचनाओं को परिवर्तित करने के उपायों की पेशकश करना ताकि समाज मे न्यायवादी बदलाव हो सके।

Q2 नव समाजशास्त्र की अवधारणा को समझाइए।

Ans नव समाजशास्त्र :-

मनुष्य एक संवेदनशील प्रणाली है तथा सभी घटनाओं पर उसकी भावनाओं व विचारों का प्रभाव पड़ता है वह किसी भी घटना का क्या अर्थ निकलता है उसे किस प्रकार समझता है यह अपने आप मे बहुत महत्वपूर्ण है।

→ नव समाजशास्त्र का महत्व :-

(i) सोशल मीडिया का प्रभाव :-

नव समाजशास्त्र यह अध्ययन करता है कि सोशल मीडिया और इंटरनेट कैसे सामाजिक संबंधों, आदर्शों और व्यवहार में परिवर्तन पैदा करता है यह विशेष रूप से युवा पीढ़ियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर कैसा प्रभाव डालता है। उसकी भाषा, सोच और सामाजिक संबंधो मे कैसे परिवर्तन लाता है का अध्ययन करता है।

Subject ____ Date : __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

(ii) जेंडर और लैंगिक पहचान :-

समाज मे लैंगिक और जेंडर पहचान के संबंध मे भी विशेष बदलाव हुए है कुछ परम्पराओ को छोडकर लोग अब जेंडर और लैंगिक पहचान के सवालो पर अधिक जागरूक हो रहे है।

(iii) डिजिटल क्रांति :-

डिजिटल क्रांति तकनीकी नवाचार के परिणामस्वरूप सामाजिक परिपेक्ष्य मे बदलाव लेकर आयी है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, ई- कामर्स और स्मार्टफोन के uss के साथ हमारी जीवन शैली, रोजगार और संवाद की प्रक्रिया मे महत्वपूर्ण बदलाव हुआ है

नव समाजशास्त्र के कुछ प्रमुख सिद्धान्तो मे शामिल है:-

1) सामाजिक निर्माण:-

नव समाज शास्त्र का तर्क है कि सामाजिक वास्तविकता सामाजिक रूप से निर्मित है, अर्थात यह लोगो द्वारा साझा की जाने वाली मान्यताओं और अर्थो से निर्मित होती है।

2) एजेंसी :-

नव समाजशास्त्र का तर्क है कि व्यक्तियों के पास सामाजिक संरचनाओ के भीतर कार्य करने की क्षमता है इसका मतलब है कि लोग केवल सामाजिक बलो के उत्पाद नही है।

3) शक्ति:-

नव समाजशास्त्र का तर्क है कि शक्ति सामाजिक

Subject ____ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

संबंधो में निहित है न कि व्यक्तियों या संस्थाओं में अर्थात् शक्ति को लोगो के बीच बातचीत के माध्यम से साझा जाना चाहिए।

4) ज्ञान :-

नव समाजशास्त्र के अनुसार ज्ञान सामाजिक रूप से निर्मित है और यह शक्ति संबंधो से जुड़ा है अर्थात ज्ञान को तटस्थ या वस्तुनिष्ठ नहीं माना जाना चाहिए, बल्कि इसे उन सामाजिक और ऐतिहासिक सन्दर्भों को ध्यान में रखकर देखा जाना चाहिए जिसमें इसका निर्माण किया गया था।

★ नव समाजशास्त्र के प्रमुख उदाहरण :-

(i) प्रतिकात्मक अंतः क्रियावाद :-

प्रतिकात्मक अतः क्रियावाद अंतः क्रियावाद का ऐसा स्वरूप है जिसमें कुछ संकेतो प्रतीको, चिन्हो आदि का प्रयोग सामाजिक दुनिया या व्यवहार को समझने हेतु किया जाता है।

(ii) नारीवादी समाजशास्त्र :-

नारीवादी समाजशास्त्र के अनुसार लिंग सामाजिक रूप से निर्मित है और यह सामाजिक असमानता और उत्पीड़न का एक प्रमुख स्रोत है। इस दृष्टिकोण से समाजशास्त्र को लिंग के आधार पर सामाजिक असमानता को समझने और चुनौती देने के लिए कार्य करना चाहिए।

(iii) उत्तर आधुनिक समाजशास्त्र :-

उत्तर आधुनिक समाजशास्त्र के अनुसार समाज तेजी से बदल रहा है और इस पर पारम्परिक समाजशास्त्रीय सिद्धान्त अब लागू नहीं होते है। इस दृष्टिकोण से समाजशास्त्र को इन परिस्थितियों को समझने के लिए नये तरीके सिद्धान्त विकसित करने की आवश्यकता है

Subject Unit III

Topic :- समाजशास्त्रीय पद्धतियाँ

समाजशास्त्र मे मुख्य रूप से चार पद्धतियाँ पायी जाती है -

1) ऐतिहासिक
2) उद्विकासीय
3) तुलनात्मक
4) अनुभाविक

- समाजशास्त्र अपनी पद्धतियों के माध्यम से वैज्ञानिक दृष्टिकोण बनाये रखते हुये परमाणिक निष्कर्षों तक पहुंचने मे बहुत कुछ सफल हो गया है।

मुख्यतौर पर समाजशास्त्री पद्धति को दो आधारो पर बांटा गया है।

1) गुणात्मक पद्धति :- जिन ~~पद्धतियो~~ पद्धतियो कि सहायता से अमूर्त तथ्यों का अध्ययन किया जाता है, उन्हे हि गुणात्मक पद्धति कहा जाता है।
समाजशास्त्र में अमूर्त तथ्यो या घटनाओ जैसे सामाजिक सम्बन्धो सामाजिक मूल्य, धारणाओ विश्वास प्रवृत्तियाँ आदि का अध्ययन करने के लिए गुणात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है समाजशास्त्र में प्रयुक्त गुणात्मक पद्धतियाँ निम्न है।

1) आगमन एवं निगमन पद्धति
2) व्यक्तिगत जीवन अध्ययन पद्धति
3) समाजमिति
4) सामाजिक दूरी का पैमाना
5) सामूहिक अध्ययन पद्धति

Subject ______ Date : __/__/____

MON TUE WED THR FRI SAT SUN

2) परिमाणात्मक पद्धति :-

मूर्त तथ्यों या घटनाओं का अध्ययन करने के लिए जिन पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है अर्थात् उन्हें परिमाणात्मक पद्धति कहते हैं। मुख्य तौर पर यह अध्ययन पद्धति निम्न है:-

(i) सामाजिक सर्वेक्षण पद्धति
(ii) सांख्यिकी पद्धतियां
(iii) ऐतिहासिक पद्धति
(iv) संरचनात्मक प्रकार्यात्मक पद्धति

Subject ______ Date: __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

ऐतिहासिक पद्धति

इतिहास के द्वारा समाज कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक घटनाओं क्रमिक एवं व्यवस्थित अध्ययन करके हम सामाजिक जिवन में निरन्तरता और सामान्य धारा को समझ सकते हैं। समाज कि उत्पत्ति और विकास को समझने के लिए ऐतिहासिक पद्धति ही एकमात्र एकमात्र विधि है। समाजशास्त्र में एक ऐतिहासिक विधि का प्रयोग 19 वी सदी में होने लगा सन 1859 में डार्विन की पुस्तक Origin of The Species अर्थात जीवों की उत्पति के प्रकाशन के बाद से तो समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र में ऐतिहासिक विधि लगभग छा सी गई। और परिवार, विवाह, नातेदारी, धर्म, राजनैतिक एवं आर्थिक संस्थाओं के अध्ययन हेतु इस विधि का प्रयोग किया जाने लगा।

ऐतिहासिक विधि को प्रयोग में लेने वाले विद्वानों के नाम :-

(i) कॉम्टे
(ii) स्पेन्सर
(iii) समनर
(iv) दुर्खीम
(v) वेबर
(vi) सोरोकिन
(vii) ऑगबर्न
(viii) मिल्स
(ix) रेडफ्ड रैरो
(x) राधा कुमुद मुखर्जी
(xi) ए० आर देसाई
(xii) दुबे

ऐतिहासिक पद्धति कि उत्पती :-

अंग्रेजी का History शब्द Histaria से बना है जिसका अर्थ है सिखकर या बोलकर ज्ञान प्राप्त करना

Subject ______ Date : __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

अर्थात ऐतिहासिक विधि का अर्थ है किसी घटना या समस्या के कारकों को उसके अतीत में खोजना दूसरे अर्थों में अतीत की सहायता से वर्तमान को समझना ऐतिहासिक विधि का मूलमंत्र है।

परिभाषाऐं :-

(i) श्रीमती पी०वी० यंग के अनुसार :- "ऐतिहासिक पद्धति आगमन के सिद्धान्तों के आधार पर अतीत की उन सामाजिक शक्तियों की खोज है जिन्होंने वर्तमान को ढाला है"।— किसी विशिष्टता के आधार पर व्यापक निष्कर्ष निकाले जाते हैं

(ii) रेडक्लिफ ब्राउन के अनुसार :- "ऐतिहासिक पद्धति वह विधि है जिसमें वर्तमान काल में घटित होने वाली घटनाओं को अतीत में घटित घटनाओं के धारा प्रवाह व क्रमिक विकास की एक कड़ी के रूप में मानकर अध्ययन किया जाता है।

संक्षेप में :- यह अतीत की सहायता से वर्तमान को समझने की विधि है

ऐतिहासिक विधि के स्रोत :- ऐतिहासिक पद्धति का मुख्य आधार ऐतिहासिक तथ्य है है जिनका संकलन विभिन्न स्रोतों द्वारा किया जा सकता है।

(i) लिखित सामाग्री :- जो प्रलेखो, शिलालेखों व प्राचीन सिक्कों एवं इमारतों पर दिये गये विवरण के रूप में उपलब्ध होते हैं।

Subject ______ Date : __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

(ग) भू वैज्ञानिकों के द्वारा खुदाई से प्राप्त वस्तुएं :- जैसे मूर्तियां, बर्तन एवं अन्य अवशेष आदि।

ऐतिहासिक पद्धति के चरण :-

ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग करने के लिए निम्नलिखित चरणों से गुजरना पड़ता है।

(i) **समस्या का चुनाव (selection of problem) :-**

इस विधि के द्वारा अध्ययन करते समय सर्वप्रथम समस्या का चुनाव किया जाता है। जिसका शोध करता अध्ययन करना चाहता है समस्या ऐसी होती है जिसका ऐतिहासिक विधि द्वारा अध्ययन संभव हो।

(ii) **सूचना स्रोतों का निर्धारण :-**

समस्या के चुनाव के बाद समस्या से सम्बंधित तथ्यों के स्रोतों को ज्ञात किया जाता है। अर्थात यह देखा जाता है कि ऐतिहासिक तथ्य किन ग्रन्थों पुस्तकालय संग्रहालय एवं अन्य स्थानों से प्राप्त हो सकते है। इन सभी कि जानकारी अध्यन से पहले ही प्राप्त कर ली जाती है।

(iii) **तथ्य संकलन :-**

सूचना स्रोतों का निर्धारण कर लेने के बाद उन स्रोतों के विषय से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन किया जाता है।

Date : __/__/____
MON TUE WED THR FRI SAT SUN

Subject ____________

(v) तथ्यो का वर्गीकरण :-

ऐतिहासिक पद्धति द्वारा अध्ययन का अगला चरण संकलित तथ्यो को अलग - अलग भागों मे बाटना जिससे की उनकी परस्पर तुलना की जा सके गुणात्मक एवं तथ्यात्मक (संख्यात्मक) तथ्यों को अलग एवं व्यक्ति व्यवस्थित किया जाता है।

(vi) विश्लेषण एवं व्याख्या :-

तथ्यों के वर्गीकरण के बाद उनका वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ विश्लेषण एवं व्याख्या कि जाती है। जिसमें घटनाओं को कार्य कारण के आधार पर समझाया जाता है। अर्थात ऐसा करने से व्यक्तिगत पक्षपात से और निष्ठतापरक अध्ययन किया जाता है।

(vii) प्रतिवेदन का निर्माण :-

ऐतिहासिक पद्धति द्वारा अध्ययन का अंतीम चरण प्रतिवेदन लेखन है प्रतिवेदन लिखते समय बोधगम्य वस्तुनिष्ठ एवं रोचक भाषा शैली का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(viii) ऐतिहासिक पद्धति का महत्व :-

सामाजिक अनुसंधान कार्ता जो वर्तमान का विश्लेषण करते समय अतीत की उपेक्षा करता है और बहोत बडा जोखिम उठाता है। इसलिए हमें अतीत के समाज का ज्ञान करता है जिसकी कोई भी सामाजिक वैज्ञानिक अवेहलना नही कर सकते। अनेक समाजशास्त्रीयों ने अपने अध्ययन मे ऐतिहासिक समाजशास्त्र का उदय हुआ इसकी उपयोगिता का महत्व निम्न प्रकार से है।

(1) विकासीत घटनाओं का अध्ययन :-

ऐतिहासिक विधि के द्वारा हम

Subject ______ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

सकती है कि हम किसी विशेष घटना या संस्था के पास घटने या उदय होने, उसकी उत्पत्ति और विकास को तथा उसे जन्म देने वाली परिस्थितियों को ज्ञात कर सकते हैं अतीत के माध्यम से ही हम वर्तमान को अच्छी तरह समझ सकते हैं व्हाइटहेड ने लिखा है "वर्तमान में उभरती हुई प्रत्येक विशेषता में उसका सम्पूर्ण अतीत होता है और साथ ही उसके भविष्य का बीज भी छिपा रहता है।" अतीत अनुभवों का भण्डार होता है जिसके माध्यम से हम वर्तमान को भली भांति समझ सकते हैं। विकासशील घटनाओं के विकासक्रम में आने वाले परिवर्तनों के अध्ययन के लिए यही विधि सर्वश्रेष्ठ है। समाजों, सभ्यताओं एवं संस्थाओं की उत्पत्ति परिवर्तन एवं विकास को समझने में यह विधि अत्यन्त उपयोगी है।

(2) सामाजिक - सांस्कृतिक परिवर्तनों का अध्ययन :- ऐतिहासिक विधि के द्वारा हम सामाजिक - सांस्कृतिक परिवर्तनों की प्रक्रिया को सरलता से समझ सकते हैं। समाज वैज्ञानिक की विशेष रुचि परिवर्तन को ज्ञात करने में होती है जब सामाजिक संस्थाओं एवं परिस्थितियो में परिवर्तन आता है तो उनके प्रभाव के कारण सामाजिक संगठन एवं संरचना भी परिवर्तित होती है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया का अध्ययन ऐतिहासिक विधि द्वारा ही संभव है।

3 अतीत के प्रभाव का मूल्यांकन :- ऐतिहासिक पद्धति के द्वारा हम किसी भी समाज पर भूतकालीन प्रभाव के महत्व का मूल्यांकन कर सकते हैं। अतीत के प्रभाव से कोई भी समाज मुक्त नहीं होता है लेकिन परम्परागत समाजों एवं प्राचीन संस्कृति वाले समाजो का अध्ययन उस समय तक अपूर्ण ही रहेगा जब तक उन पर पड़ने वाले अतीत के प्रभाव का मूल्यांकन नहीं कर लिया जाता। जिस समाज का इतिहास जितना लम्बा होता है, उस पर अतीत का

प्रभाव भी उतना ही गहन होता है। जिसका अध्ययन ऐतिहासिक पद्धति से ही सम्भव है।

(4) **समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण की व्यापकता** :- समाजशास्त्र की अन्य विधियाँ सामाजिक घटनाओं को विभिन्न छोटी छोटी इकाईयों में बाट कर उनका सूक्ष्मता से अध्ययन करती हैं जबकि ऐतिहासिक पद्धति सामाजिक घटनाओं को उनकी समग्रता एवं सम्पूर्णता में देखती हैं। इस प्रकार यह विधि समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण को व्यापकता प्रदान करती है। इसके द्वारा समग्रवादी अध्ययन किये जा सकते है।

(5) **सामाजिक शक्तियों का अध्ययन** :- ऐतिहासिक पद्धति द्वारा हम उन सामाजिक शक्तियो का अध्ययन कर सकते है जिन्होंने वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में योगदान किया है। अतीत के अध्ययन से ही हम वर्तमान के रहस्यों को जान सकते है। अंग्रेज दार्शनिक बर्नार्ड शा (Bernard Shaw) ने लिखा है, " अतीत समूह के पीछे नहीं होता वरन समूह में विद्यमान होता है। आप बीते हुए कल से भिन्न अवश्य ही है परन्तु यह कल ही है जिसने कि आज को ढाला है और यही बीता हुआ कल व आने वाले कल को अवश्य प्रभावित करेगा।" इस प्रकार वर्तमान व्यवस्था का निर्माण करने वाली सामाजिक शक्तियों के प्रभाव एवं क्रम विकास का अध्ययन ऐतिहासिक विधि द्वारा सफलता से किया जा सकता है।

ऐतिहासिक पद्धति की सीमाएं :- (Limitations of Historical Method)

(1) **विश्वसनीय सामग्री का अभाव** :- ऐतिहासिक विधि की सबसे बड़ी सीमा यह है कि जिन स्रोतों द्वारा तथ्यों का संकलन किया जाता

Subject

Date : __/__/__
MON TUE WED THR FRI SAT SUN

है, उन्हें प्रमाणिक एवं विश्वसनीय कैसे माना जाए। अधिकांश ऐतिहासिक विवरण अतिशयोक्तिपूर्ण, पक्षपातपूर्ण एवं बना-बता कर लिखे होते हैं।

(2) रिकार्ड रखने के दोषपूर्ण तरीके :- इस विधि में एक कठिनाई यह भी है कि ऐतिहासिक तथ्यों के रिकार्ड व्यवस्थित तरीके से नहीं रख पाते।

(3) प्रलेखों का बिखराव :- ऐतिहासिक विधि का एक दोष यह भी है कि इसमें दस्तावेज इधर-उधर बिखरे होते हैं वे एक ही स्थान पर उपलब्ध नहीं होते हैं।

(4) तथ्यों या घटनाओं की परीक्षा व पुनरावृति असम्भव :- ऐतिहासिक घटनाओं का सम्बन्ध भूतकाल से होता है जिनकी न पुनरावृति हो सकती है और न ही उनका अवलोकन ही किया जा सकता है उन्हें केवल तार्किक आधार पर समझा जा सकता है।

(5) गणना और माप सम्भव नहीं :- चूंकि ऐतिहासिक तथ्यों एवं घटनाओं का सम्बन्ध भूतकाल से होता है जिनकी अतः उनका वर्णन ही किया जा सकता है उनका सांख्यिकी विधि द्वारा माप सम्भव नहीं है।

(6) एकरूपता का अभाव :- ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में विभिन्न इतिहासकारों के विचारों में एकरूपता नहीं पायी जाती है। उनकी मत-भिन्नता के कारण सही स्थिति क्या रही, यह जानना एक

कठिन कार्य है।

(7) आधुनिक समाजो के लिए अनुपयुक्त :- ऐतिहासिक पद्धति द्वारा हम अतीत के समाजो का अध्ययन कर सकते है किन्तु वर्तमानकाल की अनेक समस्यों का सम्बन्ध तात्कालिक घटनाओ से है। का अध्ययन इस पद्धति द्वारा नही कर सकते है।

(8) पक्षपात की सम्भावना :- ऐतिहासिक विधि से अध्ययन करने मे व्यक्तिगत पक्षपात की अधिक सम्भावना रहती है क्योकि प्रत्येक इतिहासकार घटना को अपने दृष्टिकोण से देखता है और इसकी व्याख्या व निष्कर्ष उसके अपने होते है।

(9) काल्पनिक तथ्यो का प्रयोग :- ऐतिहासिक पद्धति मे प्राचीन घटनाओ, समाजो, संस्थाओ एवं संस्कृतियो का अध्ययन किया जाता है। कई बार हमे इनकी प्रारम्भिक स्थिति के बारे मे कोई प्रमाण उपलब्ध नही होते है। ऐसी स्थिति मे शोधकर्ता उनके बारे मे काल्पनिक अनुमान ही लगा जाते है। उसके अध्ययन को अवैज्ञानिक एवं दोषयुक्त बना देता है। उपर्युक्त दोषो के होते हुए भी इस विधि का उपयोग समाज विज्ञानों मे वर्तमान की घटनाओ को अतीत से जोड़ने एवं समाज संस्थाओ एवं संस्कृतियो के उद्भव एवं विकास को जानने के लिए किया जाता रहा है।

ऐतिहासिक पद्धति का समाजशास्त्र मे प्रयोग : कुछ उदाहरण

समाजशास्त्र मे ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग करने वाले विद्वानो की एक लम्बी सूची है किन्तु उनमे से कुछ प्रमुख इस प्रकार है:

Subject ____ Date : __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

ऑगस्ट कॉम्ट ने समाज के विकास की व्याख्या इसी पद्धति के आधार पर करते हुए समाज के विकास को मानव बौद्धिक विकास से जोड़ा और कहा कि प्रत्येक समाज विकास के तीन स्तरों से गुजरता है- धार्मिक अवस्था, तात्विक अवस्था एवं वैज्ञानिक अवस्था।

हरबर्ट स्पेन्सर ने भी समाज के विकास, उसमें आने वाली कठिनाइयां, विकास के चरणों एवं प्रकार्यों की व्याख्या ऐतिहासिक पद्धति के आधार पर की है।

मैक्स वेबर ने आधुनिक पूंजीवाद के उदय और उस पर धर्म के प्रभाव की कार्य-कारण के आधार पर व्याख्या इसी विधि के आधार पर की है।

वेस्टरमार्क ने अपनी पुस्तक 'History of Human Marriage' में मानव विवाह के इतिहास को प्रकट किया है।

ओपनहीमर ने अपनी कृति 'The State' में सी. राइट मिल्स ने अमेरिका के सफेदपोश अपराधियों का तथा रेमण्ड ऐरो ने संघर्ष एवं युद्ध का ऐतिहासिक विवेचन किया है। कार्ल मार्क्स ने मानव इतिहास की भौतिक व्याख्या प्रस्तुत की। उनका द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद भी इस विधि पर आधारित है।

Unit - III

PAGE NO.:
DATE: / /

Lesson - 7

Topic :- समाज

परिभाषा :-

समाज शास्त्र में प्राथमिक अथवा मौलिक अवधारणाएं है, इन्हे प्राथमिक अवधारणा इसलिए कहा जाता है, क्योंकि किसी भी समाज शास्त्र का विवेचन इनका महत्वपूर्ण आधारभूत होता है। प्रस्तुत विवेचन सर्वप्रथम समाज की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा समाज की प्रकृति स्पष्ट करना है।

समाज का अर्थ :-

समाज शास्त्र में समाज का तात्पर्य व्यक्तियों के किसी समूह अथवा संगठन से नहीं होता है, बल्कि व्यक्तियों के बीच पाये जाने वाले सम्बन्धों की व्यवस्थाओं को ही हम समाज कहते है

परिभाषा → मैकाइवर व पेज के अनुसार :-

समाज रीतियां कार्य विधियां, अधिकार और परास्परिक सहायता अनेक समूह उप विभाग मानव व्यवहार के नियन्तरण तथा स्वतंत्रता की व्यवस्था यह सामाजिक सम्बन्धो का जाल है तथा सदैव परिर्वतन होता रहता है।

- रिति रिवाज,
- कार्यप्रणालियां
- अधिकार
- पारस्परिक सहयोग
- सामाजिक विभाग
- व्यवहार के नियंत्रिक
- स्वतन्त्रता

PAGE NO :
DATE : / /

→ गिडिंगंस के अनुसार :-
समाज स्वंय में एक संघ अथवा संगठन है, अथवा औपचारिक सम्बन्धो का ऐसा योग है। जिसमें सहयोग देने वाले लोग पारस्परिक सम्बन्धों द्वारा जुडे होते है।

→ गिन्सवर्ग के अनुसार :-
समाज ऐसे व्यक्तियों का समूह है, जो अनेक सम्बन्धों और व्यवहार कि विधियों द्वारा संगठित है, तथा उन व्यक्तियों से भिन्न है जो इस प्रकार के सम्बन्धों द्वारा बन्धे हुए नही है। अथवा जिनके व्यवहार उनसे अलग है

समाज कि विशेषताएं अथवा लक्षण :-

समाज अमूर्त है :-
समाज की सबसे बडी पहली व्यवस्था यह है कि यह एक अमूर्त व्यवस्था है। समाज का निर्माण जिन पारस्परिक सम्बन्धो और अन्त: क्रियाओ से होता है उन्हे हम ना तो देख सकते है

→ समाज सामाजिक सम्बन्धो का जाल :-
मेकाइवर ने समाज की प्रकृति को एक मकड़ी के जाल के समान बताया है।

→ जिस प्रकार एक जाल के सभी तार व्यवस्थित क्रम मे एक-दूसरे से जुडे रहते है, उसी तरह परिवार, आर्थिक संघ, राज्य संघ तथा धार्मिक समितियो मे विभिन्न प्रकार कि क्रियाएं करते हुए व्यक्ति भिन्न सम्बन्धो कि स्थापना करते है।

→ पारस्परिक जागरूकता :-
सामाजिक सम्बन्धो की स्थापना करने वाले लोगो की पारस्परिक जागरूकता को डेविस ने समाज की एक प्रमुख विशेषता के रूप मे प्रकट किया है। वास्तव मे सभी सम्बन्धो को दो भागो मे बांटा गया है।

प्रथम :-
वह जिन्हे हम देख सकते है। जैसे आग और धुंए का संबंध अथवा दिवार और चित्र का सम्बन्ध ऐसे सम्बन्धों को हम भौतिक सबंध कहते है।

दुसरी :-
दुसरी तरफ के सम्बन्ध कुछ लोगो के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष के सम्बन्धो की स्थापना व्यक्ति द्वारा जागरूकता के दौर मे कि जाती है। इन सम्बन्धों को सामाजिक सम्बन्ध कहा जाता है। इस प्रकार पिता-पुत्र, पति-पत्नी, मालिक-मजदूर, अध्यापक-विद्यार्थी आदि।

⇒ समाज में समानता तथा भिन्नता का समावेश :-
समानता का तात्पर्य एक समाज के सदस्यों के लगभग समान दृष्टिकोण और समान उद्देश्य का होना, समानता पैदा करती है, की यह भावना व्यक्तियों में पारस्परिक जाग-

एकता पैदा करती है, और उन में यह चेतना उत्पन्न करती है।

⟹ समाज में सहयोग और संघर्ष का समावेश :-

समाज के निर्माण में सहयोग और संघर्ष दो प्रमुख तत्व है। इसका तात्पर्य यह है कि कोई भी समाज ऐसा नहीं मिलेगा जिसमें सहयोग और संघर्ष की विशेषताएँ साथ-साथ चलती है। व्यक्ति अकान्त परिस्थितियों में जहाँ पर एक और कुछ लोग तरह-तरह के सहयोग देते है। वही कुछ उनका दृष्टिकोण संघर्ष प्रतियोगिता, ईर्ष्या का सहयोग होता है।

समाज परिवर्तन शील :-

समाज कभी भी स्थल नहीं होते है। बल्कि इसमें सदैव परिवर्तन होते है। जैसे-जैसे व्यक्तियों की आवश्यकताओं सामाजिक मूल्य तथा दृष्टिकोण में परिवर्तन होता जाता है। सामाजिक सम्बन्धो का प्रकृति भी बदलने लगती है।

समाज केवल मनुष्य तक सीमित नहीं है :-

समाज कि सबसे महत्वपूर्ण विशेषता पारस्परिक जागरूकता के आधार पर मनुष्य सदस्यो के बीच सम्बन्धो की ~~स्थापना~~ स्थापना होना समूह के सहयोग एवं सदस्यों के समानता और भिन्नता का होना। मनुष्य के अतिरिक्त अनेक दूसरे जीवधारी में भी यह विशेषता काफी सीमा तक देखने को मिलती है।

PAGE NO.:
DATE: / /

→ पारस्परिक निर्भरता :- मानव समाज की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि इनका निर्माण सामाजिक सम्बन्धों के द्वारा होता है। वह सभी एक-दूसरे के पूरक होते हैं। सम्बन्धों की स्थापना करने वाले व्यक्ति अपनी-अपनी आवश्यकताओं को पुरा करने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहता है।

DATE : / /

Unit VI

Topic :- समाज और समाज की टाइपोलॉजी

(हर्बर्ट स्पेन्सर, इमाइल दुर्खीम और कालमार्क्स

हर्बर्ट स्पेन्सर ↓ इसने समाज के नाम दिये संघर्षशील व औद्योगीक

दुर्खीम ↓ यांत्रिक एकता व सावयवी एकता

हेनरी मैन ने समाज को नाम दिया :- प्रस्थिति व अनुबंध

टॉनीज ने नाम दिया :- गेमाइनशाफ्ट व गेसेलशाफ्ट

हर्बर्ट स्पेन्सर समाज का वर्गीकरण :-

- सरल समाज
- मिश्रित समाज
- दोहरे मिश्रित समाज
- तिहरे मिश्रित समाज

इन तीनो को आदिम समाज भी कहते है।

समाज को बाँटने के मापदण्ड :-

(i) समाज का आकार
(ii) श्रम विभाजन की मात्रा
(iii) राजनीतिक संगठन मे जटिलता
(iv) सामाजिक परम्परा
(v) विकास
(vi) सामाजिक स्तरीकरण

मार्क्सवाद :-

(i) वर्ग संघर्ष
(ii) पूँजीवाद
(iii) साम्यवाद

दुर्खीम का वर्गीकरण :- पुस्तक :- समाज में श्रम विभाजन

(Division of Labour in Society)

दुसरी पुस्तक :-

समाज शास्त्रीय पद्धति के नियम
(The Ruler of Society Method)

दुर्खीम का वर्गीकरण

- सरल समाज
- सरल बहुखण्डीय समाज
- सरल मिश्रित बहुखण्डीय समाज
- दोहरे मिश्रित बहुखण्डीय समाज

दुर्खीम ने सर्वप्रथम अपनी पुस्तक :- समाज में श्रम विभाजन मे सामाजिक श्रम विभाजन सामाजिक एकता के आधार पर प्राचीन एवं आधुनिक समाजो का विभाजन प्रस्तुत किया उनके अनुसार प्राचीन समाज मे यौगिक एकता पायी जाती है। अर्थात समाज के सभी सदस्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति स्वंय करते है तथा श्रम विभाजन बहुत कम पाया जाता है।

इसके विपरीत आधुनिक समाजो में सावयवी एकता पायी जाती है। अर्थात समाज के सभी सदस्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु एक दूसरे पर निर्भर होते है। तथा श्रम विभाजन पाया जाता है। लेकिन दूर्खीम को कुछ समय बाद इस वर्गीकरण में कमी महसूस हुई तो उन्होंने अपनी पुस्तक समाजशास्त्रीय पद्धति के नियम मे समाज को पुनः चार भागो में वर्गीकृत किया।

दुर्खीम के अनुसार :- सरल समाज बिखण्डीय होते है अर्थात जिनके आगे खण्ड नही होते जैसे एक झुंड यह एक अकेला तथा क्रियाशील समूह समूह होते है

Date : __/__/____
MON TUE WED THR FRI SAT SUN

Subject ________

इसके सदस्य अपने सार्वजनिक (आधारभूत) उद्देश्य कि पूर्ति हेतु एक दुसरे का सहयोग करते है। यह किसी के अधीन नहीं होते। कोई केन्द्रिय नियंत्रण की व्यवस्था नही पायी जाती है।

अनेक सरल समाज मिलकर सरल बहु खण्डीय समाज का निर्माण करते है।

इरोक्यूस मिश्रित विशेषता वाले सरल समाज
Exp मिलकर सरल मिश्रित बहुखण्डीय समाज का निर्माण करते है।

इसमे मिश्रित बहुखण्डीय समाज को प्राचीन समाज मे रखा है इसे वर्गीकरण मे यह बात स्पष्ट करना भूल गये की आधुनिक तथा विकासशील समाज को किस श्रेणी मे रखा जाए।

कालमार्क्स का वर्गीकरण
आर्थिक व्यवस्था का आधार मानकर

- आदिम समाज
- एशियाई समाज
- प्राचीन समाज
- सामन्तवादी समाज
- पूंजीवादी समाज

(i) आदिम समाज :- ऐसे आदिम समाज को साम्यवादी समाज कहा जाता है इसमे समाज में उत्पादनो के साधनों पर पूरे समुदायों का समान अधिकार होता है ना कि किसी व्यक्ति विशेष या कुछ व्यक्तियों का उत्पादन प्रणाली आदिम प्रकार के औजारो की सहायता से थोडा बहुत उत्पादन एवं पशुओं का शिकार करके अपनी आवश्यकता की पूर्ति करते थे।

{ जहां पर तेरे या मेरे की कोई भावना नहीं होती }

Subject ____________ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

(ii) एशीयाई समाज :-
मार्क्स के अनुसार कटिशन :-
यह एक ऐसा समाज है जो कृषि प्रधान आर्थिक व्यवस्था उत्पादन की छोटी इकाइयो पर आधारित है इसके साथ ही केन्द्रित राज्य और नौकरशाही है।
जिसकी शक्ति जल पूर्ति नियमन पर निर्भर करती है। उदाहरण → भारत

(iii) प्राचीन समाज :- परम्पराओ पर विशेष बल

ऐसे समाजो मे परम्पराओ को विशेष महत्त्व दिया जाता है। तथा व्यक्ति के व्यवहारो का निर्धारण परम्पराओ द्वारा ही होता है।
ऐसे समाजो मे उत्पादन की प्रणाली अधिक विकसीत नही होती। लोग पशुपालन एवं खेती का कार्य साधारण तौर पर कम विकसित औजारो कि सहायता से करते थे। सम्पति का असमान वितरण पाया जाता है। परिणाम स्वरूप आर्थिक आधार पर वर्गो का निर्माण हो जाता है। जिसके कारण वर्ग शोषण व वर्ग संघर्ष कि स्थिति देखने को मिलती है।

(iv) सामन्तवादी समाज :-
11 वी शताब्दी से 19 वी शताब्दी तक यूरोपीय समाज और जापान सामन्तवादी इसन समाज के विभिन्न उपप्रकारों के अन्तर्गत आते है। ऐसे समाजो मे भूमि तथा उत्पादन के अन्य साधनो पर साधारण किसानो का अधिकार ना होकर कुछ सामन्तों या जमींदारो का अधिकार होता है

Date : __/__/____
MON TUE WED THR FRI SAT SUN

Subject ____________

(v) पूँजीवादी समाज :-
मशीनों ~~मास~~ का आविष्कार व बड़े उद्योगो धन्धो के कारण पूँजीवादी समाज की स्थापना हुई।

मशीनों की सहायता से बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाने लगा। उत्पादन के साधनों पर कुछ बड़े पूँजीपतियों का अधिकार हो गया।

उत्पादन कार्य मजदूरो द्वारा किया जाता था उत्पादन के साथ मुनाफा बढ़ता गया और पूंजीपति और अधिक धनवान होते गये।

आलोचनाएँ :- (i) संस्थाओं कि व्यवस्था
(ii) सामाजिक समूहो की संख्या व स्वरूप
(iii) सामाजिक सम्बन्धो के आधार पर

(i) संस्थाओं कि व्यवस्था :-
आर्थिक संस्था महत्वपूर्ण जिसके आधार पर समाज को एशियाई समाज तथा पश्चिमी समाज में विभाजित किया जाता है।

(ii) सामाजिक समूहो की संख्या व स्वरूप :-
इनके आधार पर समाजो को सरल तथा आदिम, जटिल समाजो मे वर्गीकृत किया गया है।

(iii) सामाजिक सम्बन्धो के आधार पर :-
व्यक्तिगत और अव्यक्तिगत समाजो मे वर्गीकृत किया जाता है

Subject

Date : __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

प्रश्न① समुदाय का अर्थ, परिभाषा और विशेषताओं का वर्णन कीजिए ?

उत्तर सुदायय का तात्पर्य :- व्यक्तियो के किसी भी ऐसे बड़े समुदाय से होता है जो एक निश्चित क्षेत्र के अन्दर रहता है तथा जिसमें उसके सदस्यो का सामान्य जीवन व्यतित होता है। सामान्य जीवन का तात्पर्य व्यक्तियो के सम्पूर्ण जीवन से है इस प्रकार इस शब्द का प्रयोग हम किसी बस्ती, गाव, शहर, तथा जनजाति के लिए करते है

उत्पति :- शाब्दिक अर्थ

→ शाब्दिक रूप से अंग्रेजी शब्द (COMMUNity) लैटिन भाषा के दो शब्द (com) ~~Munity~~ Munis से मिलकर बना है जिसका अर्थ क्रमश: एक साथ (com) और सेवा करना इस प्रकार शाब्दिक रूप से एक साथ मिलकर कर्तव्य को पूरा करने वाले समूह को समुदाय कहा जा सकता है। 'मैकाइवर' " समुदाय सामान्य जीवन बस्ती का क्षेत्र है।"

परिभाषा :-

① किंग्सले डैविस के अनुसार :- "समुदाय एक ऐसा स्थानीय समूह है जिसके अन्तर्गत सामाजिक जीवन के सभी पहलू आ जाते है"

② बोगार्डस के अनुसार :- "समुदाय एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसमें कुछ सीमा तक हम की भावना होती है तथा जो एक ~~निश्चित~~ निश्चित क्षेत्र मे जीवन व्यतीत करता है।

सहकारीता का मूल मंत्र - [सब एक के लिए, एक सब के लिए]

Subject ____ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

(1) समुदाय की विशेषता व लक्षण :-

(i) व्यक्तियों का एक बड़ा समूह :

समुदाय का निर्माण इतने व्यक्तियों द्वारा होता है जो एक दूसरे की सहायता से अपनी सभी आवश्यकताओं को पूरा कर सके इस प्रकार तुलनात्मक रूप से एक बड़ा सामाजिक समूह है।

(ii) निश्चित भू-भाग :-

एक समुदाय के सदस्य किसी निश्चित भू-भाग पर रहकर ही अपनी विभिन्न आवश्यकता को पूरा करते हैं

(iii) सामुदायिकता की भावना :-

सामुदायीकता की भावना या हम की भावना समुदाय का सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु या तत्व है। हम की भावना के बिना समुदाय का निर्माण अथवा विकास संभव नहीं है। एक ही भू-भाग पर काफी समय तक रहने से उसके निवासियों में पारस्परिक सहायता तथा सहानुभूति की भावना विकसित होती है। तथा सहयोग की भावना पनपती है।

(iv) सामान्य जीवन :-

~~निश्चित भू-भाग~~ सामान्य जीवन का तात्पर्य है कि समुदाय एक आत्मनिर्भर ईकाई है जिसके सदस्य के जीवन के ढंग में अधिक भिन्नता नहीं पाई जाती है। उदाहरण के लिए एक जनजाती अथवा खानाबदोश झुंड एक समुदाय है इसके सभी सदस्य इसी के अन्दर अपनी जैविकीय आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक धार्मिक और मनोरंजन संबंधी आवश्यकताओं को पूरा कर लेते हैं तथा सभी का जीवनस्तर और विचार एक

Subject ____ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

दूसरे के बहुत समान होते हैं।

सामान्य नियम :-

नियमों की एक सामान्य व्यवस्था पर बहुत अधिक बल दिया है निश्चित भू-भाग पर एक रहने वाले समूह को नियंत्रित करने के लिए कुछ नियमों का होना अत्यधिक आवश्यक है एक समुदाय के नियम अपने सभी सदस्यों के लिए समान होते हैं समान नियमों से बंधे होने के कारण एक समुदाय के सदस्यों में समानता की चेतना का विकास होता है।

अन्तर्समुदाय :-

अन्तर्समुदाय से तात्पर्य एक समुदाय के अन्दर ही अनेक उपसमुदाय हो सकते हैं जैसे- जनजाती एक समुदाय है। लेकिन एक जनजाती के लोग अनेक गाँवों व क्षेत्रों में रहने के कारण विभिन्न उपसमुदाय में विभाजित हो जाते हैं। इसके बाद भी व इस भावना से बंधे रहते हैं कि उनकी संस्कृति व व्यवहार के तरीके एक ही जैसे हैं तथा वह एक ही समुदाय के अंग हैं।

स्वतः विकास :-

समुदाय की एक विशेषता यह है कि इसका निर्माण नहीं किया जाता बल्कि इसका धीरे-२ अपने आप विकास होता है। जब एक स्थान पर कुछ व्यक्ति लम्बे समय तक साथ-साथ रहते हैं। और पारस्परिक सहायता के द्वारा अपनी सभी आवश्यकताओं को पुरा करते हैं, तो ऐसा समूह अपने आप एक समुदाय के रूप में परिवर्तित हो जाता है। उदा० के लिए एक गांव अथवा कबीला समुदाय के उदाहरण हैं। जिनकी उत्पत्ति का कोई भी निश्चित समय अथवा

तारीख नहीं बताई जा सकती है। इसके पश्चात भी इस विशेषता को समुदाय की आवश्यक कसौटी नहीं कहा जा सकता

विशिष्ट नाम :-
प्रत्येक समुदाय के स्थायित्व के लिए उसका एक विशेष नाम होता है। एक नाम से संबंधित रहने के कारण ही सदस्यों में हम की भावना प्रभावपूर्ण बनी रहती है। यदि किसी समुदाय का नाम बदल दिया जाए तो उसके समुदाय के लिए उस समुदाय का महत्व पहले जैसा नहीं रह जाता है इतना अवश्य है कि विशिष्ट नाम समुदाय का कोई आवश्यक आधार नहीं है लेकिन सामुदायिकता की भावना को मजबूत बनाये रखने में इसका योगदान अवश्य होता है।

Q. ग्रामीण एवं नगरीय समुदाय का अर्थ बताते हुए विशेषता का वर्णन करें और अन्तर भी बताइए।

(1) ग्रामीण समुदाय :-
ग्रामीण समुदाय को लघु समुदाय भी कहा जाता है। जो आकार में छोटे और आत्म निर्भर होते हैं तथा सदस्य के विचारों और व्यवहार में काफी एकरूपता पायी जाती है। जैसे- जनजाती तथा गाँव के लघु समुदाय।

(2) नगरीय समुदाय :-
नगरीय समुदाय को वृहद समुदाय भी कहा जाता है जो आकार में बड़े होने के साथ-साथ आत्मनिर्भरता, और सदस्य के विचारों और व्यवहारों

Subject ____ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

में एकरूपता का अभाव पाया जाता है जैसे → महानगर

ग्रामीण समुदाय की विशेषताएँ :-

1) ग्रामीण समुदाय आकार मे बहुत छोटा होता है।

ग्रामीण समुदाय के अधिकांश व्यक्ति कृषि कार्य में कृषि के द्वारा आजीविका उपार्जित करते है।

सदस्यों में प्राथमिक संबंधो की प्रधानता होती है

ग्रामीण समुदाय मे व्यक्तियों का जीवन प्रथाओ परम्पराओ तथा धार्मिक विश्वासो के द्वारा अधिक प्रभावित होता है।

ग्रामीण समुदाय एक आत्मनिर्भर समुदाय है तथा इसमे श्रम के विशेषीकरण का अभाव होता है।

परिवार ग्रामीण समुदाय की केन्द्रिय इकाई है। इसी के अनुसार समुदाय मे व्यक्ति की स्थिति का निर्धारण करता है।

समाज और समुदाय में अन्तर

समाज	समुदाय
1) समाज सामाजिक संबधो की व्यवस्था है।	समुदाय व्यक्तियों का समूह है।
2) समाज अमूर्त है	2. समाज मूर्त है
3 समाज मे केवल सहयोग ही नही बल्कि संघर्ष, विरोध और प्रतियोगिता भी पाई जाती है।	3 समुदाय का सबसे प्रमुख लक्षण सामुदायिकता की भावना है ऐसी भावना केवल सहयोग से ही विकसित हो जाती है।

Date: ____
MON TUE WED THR FRI SAT SUN

Subject ____

4. समाज का कोई निश्चित भू-भाग नहीं होता।	4. समुदाय के निर्माण के लिए निश्चित भू-भाग का होना अत्यधिक आवश्यक है।
5. समाज अपेक्षाकृत अधिक व्यापक और अधिक स्थाई होता है।	5. समुदाय समाज की तुलना में बहोत छोटा होता है तथा इसमें समाज की अपेक्षा कम स्थाईत्व होता है।
6. एक समाज के अन्तर्गत अनेक समुदाय हो सकते है	6. एक समुदाय का निर्माण कभी भी अनेक समाजो के मिलने से नही होता है।
7. समाज ~~की~~ के सभी सदस्यो की स्थिति एक दूसरे की तुलना में उच्च अथवा निम्न होता है स्थिति की यह विषमता आर्थिक सामाजिक राजनैतिक, और शैक्षणिक भिन्नता पर आधारित होती है।	7. समुदाय की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसके सभी सदस्यो के जीवन में लगभग समानता का होना है। इसी समानता के कारण उनमें सामुदायिकता की भावना का विकास हो पाता है।
8. समाज एक सामान्य व्यवस्था है इसका कोई विशेष नाम नहीं होता है।	8. प्रत्येक समुदाय का एक विशेष नाम होता है। इस नाम के कारण ही एक समुदाय के सदस्यों में सामुदायिकता की पर्वतह भावना पर्वल होती है।

Lesson - 10

प्रश्न - ?

① गैमिन शॉफ्ट :-

जर्मन समाजशास्त्रीयों में से एक टॉनीज़ (1855-1936) ने सन 1887 में सामाजिक संगठन की एक धारणा विकसित कि जिसे जर्मन भाषा में गैमिन शॉफ्ट कहा गया जर्मन में गैमिन शॉफ्ट का मतलब समुदाय होता है टॉनीज़ के अनुसार प्राथमिक समूह के अनेक लक्षण मौजुद होते हैं। इसमे रहने वाले लोगों के समान पारस्परिक लक्ष्य (पारम्परिक) समान आस्थाये, समान मूल्य, व मापदण्ड होते हैं

*

→ गैमिन शाफ्ट समुदाय ग्रामीण जीवन का प्रतीक होता है यह एक सम छोटा समुदाय होता है जहा लोगो का जीवनस्तर तथा अनुभव समान होते है। समुदाय में रहने वाले लोगों में परस्पर घनिष्ठता पाई जाती है। आकार छोटा होने के कारण सभी लोग एक दूसरे से परिचित होते है। तथा अनौपचारिक संबध पाये जाते है। सदस्यों में समाज के प्रति प्रतिबद्धता होती है।

लक्षण / विशेषताएं :-

1. धर्म को प्रधानता दी जाती है।
2. संबधों में घनिष्ठता व अनौपचारिक संबध पाये जाते है।
3. परम्पराओं का निर्वहन सर्वसम्मति से किया जाता है।
4. व्यक्तिगत हित की अपेक्षा सामुहिक कल्याण की भावना को भर दिया जाता है।

(शहर)

① गेसेल शाफ्ट:

इसके अन्तर्गत उन समाजों को रखा जाता है जिसमे गौण (स्वल्प) तथा विशिष्ट प्रकार के संबंधों को प्रमुखता दी जाती है इन समाजो मे कमजोर संगठन पाया जाता है तथा व्यक्तिगत हितो को अधिक महत्व दिया जाता है इसमे सामाजिक नियंत्रण का माध्यम अनौपचारिक तथा नैतिक होता है यह आधुनिक शहरी जीवन की विशेषताओं के साथ एक आदर्श प्रकार का समुदाय होता है। सामुदायिक भावना का अभाव पाया जाता है व्यक्तिगत स्वार्थ पर्वत होता है इसमे सामाजिक नियंत्रण औपचारिक संस्थाओं जैसे कानून आदि पर निर्भर रहता है। गेसेल शाफ्ट मे सामाजिक परिवर्तन देखने को मिलता है अर्थात यह स्थाई प्रगति का नही होता है

गेमिन शाफ्ट और गेसेल शाफ्ट मे अन्तर

	गेमिन शाफ्ट	गेसेल शाफ्ट
1.	यह ग्रामीण कृषि जीवन का प्रतिक है। (कृषि प्रधान)	1. यह आधुनिक शहरी जीवन का प्रतिक है। (औद्योगीकरण)
2.	इसमे प्रदत्त पर प्रस्थिति पर बल दिया जाता है	2. इसमे अर्जीत परिस्थित पर बल दिया जाता है।
3	सामाजिक संस्थाएं धर्म पर परिचित होती है।	3. सामाजिक संस्थाओ का निर्माण विभिन्न आवश्यकताओ को ध्यान मे रखकर किया जाता है।
4.	सामाजिक परिवर्तन तुलनात्मक दृष्टि से कम पाया जाता है अर्थात तुलनात्मक स्थाई प्रकृति है	4। सामाजिक परिवर्तन स्पष्ट देखने को मिलते है। अर्थात अस्थाई प्रकृति है।

Subject

5. सामुदायिक भावना पाई जाती है।	सामुदायिक भावना का अभाव होता है।

③ कल्पित समुदाय :-

बेनेडिक्स रिचर्ड ओ गोर्मन (26 अगस्त 1936 - 13 दिस. 2015) (एंग्लो, आयरिश, राजनैतिक, विभा वैज्ञानिक इतिहासकार थे उन्होंने कल्पित समुदाय की अवधारणा 1983 में प्रकाशित अपनी पुस्तक "इमेजिण्ड कम्युनिटीज रिफ्लेक्शन ऑन द ओरिजन एंड स्प्रेड नेशन लिज्म" मे पुरा। प्रस्तुत किया। कल्पित समुदाय का विचार एक राष्ट्र की अवधारणा को समर्पित किया जाता है या संदर्भ मे किया जाता है। जहा एक राष्ट्र के सदस्य कभी-भी एक दूसरे से व्यक्तिगत रूप से नही मिल सकते है या जानते है लेकिन वह कभी भी एक दूसरे के साथ अपने राष्ट्रीय पहचान की भावना महसूस करते है। इसका तात्पर्य कोई भी समुदाय इतना बड़ा हो कि उसके सदस्य एक दूसरे को आमने - सामने के आधार पर नही जानते है नही पहचानते यह कुछ हद तक कल्पना की जा सकती है यही कल्पित समुदाय है। एंडर सन ने - ~~राष्ट्रवाद~~ ने अपने कि राष्ट्रवाद के तीन विरोधाभास है इस प्रकार है :-

(i) अधिकतर ~~विषय~~ लोगो द्वारा राष्ट्र को पुरा पुराना और कालितं मानने के पूर्वाग्रह एक हालिया और आधुनिक रचना है।

(ii) राष्ट्रवाद इस मायने में सार्वभौमिक है प्रत्येक व्यक्ति एक राष्ट्र का है फिर भी प्रत्येक राष्ट्र प्रत्येक दूसरे राष्ट्र से पूरी

Remark/total Sh Kaish 7/11/2024

Subject ____________ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

तरह से अलग माना जाता है।

(iii) राष्ट्रवाद एक ऐसा प्रभावशाली विचार है कि लोग अपने राष्ट्रो के लिए मर जायेगे लेकिन साथ ही परिभाषित करना भी कठिन है।

कल्पित समुदाय को निम्नलिखित मुख्य बिन्दुओ के माध्यम से समझा जा सकता है

(i) राष्ट्रवाद पहचान :-
अंडरसन का का प्राथमिक ध्यान राष्ट्रवाद और एक राष्ट्रीय पहचान के निर्माण पर था उन्होने तर्क दिया की देश केवल प्राकृतिक रूप या उद्देश्यपूर्ण संस्था नहीं है बल्कि सामाजिक रूप से निर्मित है।

(ii) प्रिंट पूंजीवाद :-
कल्पित समुदाय को आकार देने मे समाचार, पत्रो, पुस्तको जैसे प्रिंट मीडिया की भूमिका पर प्रकाश डाला है उन्होने तर्क दिया की प्रिंट पूंजीवाद का उदय जहा लोग एक ही राष्ट्र मे दूसरो की गतिविधियो व हितो के बारे मे पढ़ सकते है यह राष्ट्रीय पहचान की भावना को बढ़ावा देने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

(iii) समानता :-
कल्पित समुदाय के प्रमुख पहलुओ मे से एकसमानता की भावना है लोक अपने साथी नागरीको से जुड़ा हुआ महसूस करते है क्योकि उनका मानना है कि वह सभी एक है अर्थात जाति धर्म लिंग, भाषा वर्ग, भौगोलिक क्षेत्र इन सब मे

एक समान है।

समावेशित :-

कल्पित समुदाय समावेशी है जिसका अर्थ है कि वह लोगों के विभिन्न समूहो को शामिल करते है जिनके पास अलग पृष्ठ भूमि विश्वास और परम्पराए हो सकती है लेकिन एक ही राष्ट्र का हिस्सा होने के कारण सबके विचार एकजुट हो सकते है।

भाषा और संस्कृति :-

भाषा और संस्कृति इस कल्पित समुदाय के आवश्यक घटक है इस साझा भाषा सामान्य ऐतिहासिक कथाए है। और सांस्कृति प्रतिक एक राष्ट्र के सदस्य के बीच अपनेपन की भावना पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

Subject ______ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

दर्शनशास्त्र

दर्शनशास्त्र अस्तित्व, ज्ञान, व मूल्य, तर्क बुद्धि, मन और भाषा जैसी मामलो से संबंधित सामान्य और मूलभूत समस्याओ का अध्ययन है। यह मौलिक प्रश्नों को संबोधित करने के अन्य तरीको जैसे कि (रहस्यवाद, मिथक या धर्म) समालोचनात्मक और आम तौर पर सुव्यवस्थित होने और तर्कसंगत युक्ति पर निर्भर ~~करता~~ है होने से अलग है।

दर्शनशास्त्र का अर्थ :-

दर्शनशास्त्र का मतलब है वास्तविकता, सत्य, अस्तित्व, तर्क और नैतिकता जैसे बुनियादी सवालो का अध्ययन करना। दर्शनशास्त्र मे इन विषयो से जुडे तर्कसंगत और व्यवस्थित विचारो का अध्ययन किया जाता है। दर्शनशास्त्र को अंग्रेजी मे फिलॉसफी (PHILOSophy) कहते जो ग्रीक भाषा के शब्द फिलोसोफिया से बना है इसका शाब्दिक अर्थ है "ज्ञान से प्रेम।

परिभाषा -

(i) अरस्तु के अनुसार "दर्शन एक विज्ञान है जो अलौकिक तत्वों के वास्तविक स्वरूप की खोज करता है।

(ii) लेविसन के अनुसार- " "दर्शन मानसिक क्रिया है"

(iii) कार्ल मार्क्स के अनुसार- " दर्शन दुनिया को बदलने ~~की~~ के लिए की गई उसकी व्याख्या है"

हेगल के अनुसार " दर्शन वह है जो अपने जीते हुए युग को विचारों में धारण कर लेता है।"

विशेषताएं -

(i) दर्शनशास्त्र विचारों का अध्ययन है जो हमारे विचारों और कार्यों को आकार देता है।
(ii) यह जीवन के बड़े सवालों पर सोचने और समझने में मदद करता है।
(iii) दर्शनशास्त्र में वास्तविकता, सत्य, अस्तित्व, तर्क और नैतिकता जैसी बुनियादी प्रश्नों और समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।
(iv) दर्शनशास्त्र में युक्तियुक्त ज्ञान दिया जाता है।
(v) दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने से आलोचनात्मक सोच, तार्किक विश्लेषण और तर्क निर्माण जैसे कौशल विकसित होती है।
(vi) दर्शनशास्त्र की परंपरा कई धर्मों और संस्कृतियों में है।
(vii) दर्शनशास्त्र की प्रमुख शाखाएं हैं ज्ञानमीमांसा, तत्वमीमांसा, तर्कशास्त्र, मूल्यमीमांसा और राजनीतिक दर्शन

1 शाखाएं - 4

(i) ज्ञानमीमांसा :-
जो ज्ञान का अध्ययन करवाती है।

तत्वमीमांसा :-
जो वास्तविकता और अस्तित्व का अध्ययन करती है।

Date : __/__/____

MON TUE WED THR FRI SAT SUN

Subject ____________

तर्कशास्त्र - जो तर्क और कारण का अध्ययन करती है।

मूल्यमीमांसा - जो सौंदर्यशास्त्र और नैतिकता के भीतर मूल्यांकन का अध्ययन करती है।

राजनीतिक दर्शन :- जो सरकार का अध्ययन करता है।

Subject Lesson - 1 छोटे प्रश्न

(Q1)प्र समाज शास्त्र के जनक कौन है → ऑगस्ट कॉम्टे

(Q2) समाज शास्त्र विषय का नाम समाज शास्त्र किस मे रखा गया → 1839 1838 ई०

(Q3) भारत में समाज शास्त्र औपचारिक प्रतिस्थापन काल कब से कब तक का है।

उत्तर 1919 से 1947

(Q4) किस समाज शास्त्री नें परिवार एवं नातेदारी पर भारत में अध्ययन किया है।

उत्तर के० एम० कपाडिया

Q5 औद्योगिक क्रान्ति का सुत्र पात कहा हुआ ?

उत्तर ब्रिटेन

प्र०6 वाटर फ्रेम मशीन का आविष्कार किसने किया ?

उत्तर ~~आर्क राइट~~ रिचर्ड आर्कराइट

प्र०7 फ्रांसीसी क्रान्ति कब हुई ?

उत्तर 1789

प्र० 8 औद्योगिक क्रान्ति का प्रभाव किन-किन पर पड़ा ?

उत्तर (i) श्रमिक वर्ग पर
(ii) पूंजीपति वर्ग
(iii) घरेलु उत्पादो में कमी

प्र०9 समाज शास्त्र और दर्शनशास्त्र मे कोई तीन अंतर ?

उत्तर (i) दर्शनशास्त्र की तुलना मे समाजशास्त्र एक नवीन विज्ञान है। दर्शनशास्त्र तुलनात्मक दृष्टि से एक प्राचीन विज्ञान है।

Date : __/__/____

MON TUE WED THR FRI SAT SUN

Subject ______

(ii) समाज शास्त्र का अध्ययन क्षेत्र विस्तृत है। व्यापक और बडा है, जबकि दर्शनशास्त्र का सीमित है।

(iii) समाजशास्त्र एक सामान्य सामाजिक विज्ञान है। जबकि दर्शनशास्त्र एक विशेष सामाजिक विज्ञान है।

प्र०10 फ्रांसीसी क्रान्ति का नारा कौनसा था।
उत्तर स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व (भाईचारा)

प्र०11 फ्रांसीसी समाज कितनी श्रेणी में विभक्त किया गया
उत्तर तीन श्रेणीयो में बांटा गया
(i) प्रथम - सम्प्रदा वर्ग → धर्म, नेता आते थे।
(ii) द्वितीय सम्प्रदा वर्ग →
(iii) तृतीय सम्प्रदा वर्ग →

(i) प्रथम सम्प्रदा वर्ग → इसके अन्तर्गत धर्म, नेता आते थे। जिन्होने फ्रांसीसी क्रान्ति से पहले धार्मिक व्यवहार को छोडकर विलासित पूर्ण जीवन व्यतित करना शुरु कर दिया

Exp :- धर्म नेता, कार्डिनल, आर्क, बिशप, एबट

(ii) द्वितीय सम्प्रदा वर्ग :- इसके अन्तर्गत आभिजात या नोबल आते है। जो भूमि के स्वामि होते थे। फ्रांसीसी क्रान्ति से पूर्व इन्होने अपने कर्तव्य भूलकर किसानो का शोषण करना प्रारम्भ कर दिया।

Exp :- भूस्वामी व न्यायधीश

(iii) तृतीय सम्प्रदा वर्ग → इसके अन्तर्गत आने वाले किसानो की स्थिती सबसे खराब थी। उनका जीवन संघर्षपूर्ण था। राज्य द्वारा भी किसानो तथा कारीगरो का भी शोषण किया जाता था। व्यापारि वकिल की स्थिति अच्छी थी।

(1) समाजशास्त्र के दो महत्व बताइए?
(2) प्रजातंत्र को सफल बनाने में समाजशास्त्र का क्या योगदान है?
(3) समाजशास्त्र का व्यवसायिक एवं व्यवहारिक महत्व को समझाइए?
(4) भारत में प्रजातंत्र के मार्ग में आने वाली बाधाओं को बताइए?
(5) समाजशास्त्र का चिकित्सा के क्षेत्र में क्या योगदान है?

उत्तर-5 मानसिक चिकित्सक के रूप मे समाजशास्त्री सामाजिक समस्याओं के ~~सु~~ सूक्ष्म अवलोकन विश्लेषण और उनके निराकरण में अपने विशिष्ट ज्ञान के आधार पर ~~महत्व~~ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

(6) पारिवारिक जीवन को सफल बनाने मे समाजशास्त्र किस हद तक सहायक है? (योगदान)
(7) समाजशास्त्र का सामाजिक नियोजन मे क्या योगदान है? / सहायक
(8) समाजशास्त्र का नगरीय विकास मे महत्व बताइए?
9) समाजशास्त्र ग्रामीण पुनर्निवास को किस प्रकार सफल बनाता है? बताइए।
10) औद्योगिक समाजशास्त्र किस प्रकार विकास प्रकार विकास करता है? (→ समाजशास्त्र)
11) वर्तमान समय व्याधिकीय सामाजिक समस्याओं का निराकरण में किस हद तक सहायक है समाजशास्त्र सहायक है?
12) समाजशास्त्र ~~का~~ सामाजिक समस्याओं को किस प्रकार से हल करती है किस प्रकार सहायक है?

(1) गुणात्मक पद्धतियां किसे कहा जाता है परिभाषा
(2) समाजशास्त्र मे प्रयोग मे लेने वाली गुणात्मक पद्धतियो के नाम बताइए ?
(3) परिमाणात्मक पद्धतियां किसे कहा जाता है
(4) समाज शास्त्र मे परिमाणात्मक पद्धतियों के नाम बताइए।
(5) दुर्खीम दा रॉल्स ऑफ सोशलोजिकल मेथड मे लेखक कौन है।

उत्तर दुर्खीम

(6) समाजशास्त्र के जनक कौन है।

उत्तर आगस्त काम्टे काम्टे

(7) मार्गन उद्विकास ने मानव समाज के कितने स्तर बताए।

उत्तर
1. जंगली अवस्था
2. बर्बर अवस्था
3. सभ्य अवस्था

→ इनकी भी 3 होती हैं
निम्न (अज्ञानावस्था)
मध्य (आरपीट)
उच्च (सम्भावजनक जीवन

(8) औरीजिन ऑफ स्पेसीज के लेखक कौन है।

उत्तर चार्ल्स डार्विन

(9) स्टॉरी ऑफ ह्यूमन मैरिज (story of human marriage) के लेखक कौन है।

उत्तर वेस्टर मार्क

(10) उद्विकास पद्धति की दो विशेषताएं बताइए।
(11) सामाजिक उद्विकासीय के कारक बताइए।
(12) तुलनात्मक पद्धति के दो महत्व बताइए।
(13) तुलनात्मक पद्धति की दो सीमाएं बताइए।
(14) अनुभाविक पद्धति की उत्पत्ति बताइए।
(15) अनुभववाद की कोई चार विशेषता बताइए।

Subject ____ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

16) ~~ए. कैप्लान~~ ए० कप्लान ने अनुभववाद के कितने प्रकार बताए? नाम बताइए।

17) अनुभववाद की उपयोगिता बताइए।

18) विज्ञान का सम्बन्ध वैज्ञानिक पद्धति से है ना कि अध्ययन विषय से। यह कथन किसका है?

उत्तर ~~स्टुअर्ट~~ स्टुअर्ट चेज़

19) जिन पद्धतियों की सहायता से अमूर्त तथ्यों का अध्ययन किया जाता है उसे कहते है।

उत्तर गुणात्मक पद्धति

20) अतीत की सहायता से वर्तमान को समझने की विधि को कहते है।

उत्तर ऐतिहासिक पद्धति

21) मरडॉक ने कितने समाजो का तुलनात्मक अध्ययन किया।

उत्तर 250

22) अकेली तुलनात्मक पद्धति आपको कुछ नही दे सकती बिना बीज बोये भूमि में कुछ नही उग सकता, यह कथन किसने कहा?

उत्तर रेड क्लिफ ब्राउन

23) समाज रीति, कार्य विधि, अधिकार और पारस्परिक सहायता अनेक समूह और उपविभाग मानव व्यवहार के नियंत्रणों तथा स्वतंत्रता की व्यवस्था यह सामाजिक सम्बन्धो का जाल है। तथा सदैव परिवर्तित होता रहता है। यह परिभाषा किसने दी।

उत्तर मैकाइवर और पेज

पाठ्यक्रम सेव हेमडेक्स बनाये

(signature) 28/11/21

Subject LESSON-7 Short Question

Date : ___/___/___

MON TUE WED THR FRI SAT SUN

प्र.1 समाज का समाजशास्त्रीय अर्थ बताइए।

प्र.2 मैकाइवर के अनुसार समाज की परिभाषा के सभी आधारों का संक्षेप में समझाइए।

प्र.3. समाज सामाजिक संबंधों की व्यवस्था किस प्रकार है बताइए। (व्याख्या कीजिए)

प्र.4. भौतिक संबंध और सामाजिक और सामूहिक संबंध किसे कहा जाता है समाजशास्त्र मे बताइए

प्र.5. समाज में समानता तथा भिन्नता को परिभाषित कीजिए।

प्र.6 समाज में सहयोग और संघर्ष का समावेश किस प्रकार है समझाइए।

प्र.7 प्रत्यक्ष सहयोग तथा अप्रत्यक्ष सहयोग को समझाते हुए, उदाहरण दीजिए।

प्र.8 समाज संघर्ष मिश्रित सहयोग है? सिद्ध कीजिए।

प्र.9 समाज तथा एक समाज मे चार अन्तर बताइए।

प्र.10 समाज सामाजिक संबंधो का जाल है यह कथन किसका है।

प्र.11 समाज संघर्ष पूर्ण सहयोग है यह कथन किसका है।

प्र.12 समाज स्वयं एक संघ है संगठन है औपचारिक संबंधो का योग है जिसमें परस्पर संबंध रखने वाले लोग एक साथ संगठित होते है। यह कथन किसका है।

उत्तर गिडिंग्स

प्र.13 सांस्कृतिक स्वायत्ता को परिभाषित कीजिए।

उत्तर प्रत्येक एक समाज की कुछ पृथक सांस्कृतिक विशेषता होती है तथा इन्ही के कारण एक समाज के सदस्यों के विचारो और मूल्य में दूसरे समाजो की तुलना में कुछ भिन्नता पाई जाये। (फ्रॉड मैन के अनुसार)

प्र०1 समुदाय का अर्थ, परिभाषा बताइए।
प्र०2 समुदाय सामान्य जीवन का क्षेत्र यह कथन किसने दिया।
उत्तर मैकाइवर

प्र०3 समुदाय एक ऐसा स्थानीय समूह है जिसके अन्तर्गत सामाजिक जीवन के सभी पहलु आ जाते है यह कथन किसने कहा ?
उत्तर किंग्सले डेविस

प्र०4 सामुदायिकता की भावना क्या है समझाइए? उदाहरण सहित
उत्तर
प्र०5 Imp सामुदायिकता की भावना मे कमी प्रमुख दशाओ को बताइए। परिणाम
प्र०6 समुदाय तथा सीमावर्ती समुदाय को समझाइए।
प्र०7 Indian Changing Villageg (इण्डियाज चेन्जिंग विलेज) के लेखक कौन है। (भारत के बदलते गांव)
उत्तर डा० श्यामचरण दुबे

प्र०8 The littile community (द लिटिल कम्युनिटि) के लेखक कौन है।
उत्तर राबर्ट रेडफील्ड

प्र०9 लघु समुदाय व वृहत समुदाय को समझाइए।
प्र०10 ग्रामीण समुदाय की विशेषता बताइए।
प्र०11 नगरी समुदाय की विशेषता बताइए।
प्र०12 बंद बन्दी यह की कोई तीन विशेषता बताइए।
प्र०13 विश्व समुदाय और आधुनिक पडोस को समझाइए
प्र०14 समुदाय और समाज मे अन्तर बताइए
प्र०15 समुदाय सबसे छोटा ऐसा क्षेत्रीय समूह है जिसमें सामाजिक जीवन पहलु आ जाते है। यह कथन किसने कहा है।

प्रश्न① गेमिन शॉकट से आप क्या समझते है?
प्रश्न② गेमिन शॉकट (समुदाय) के प्रमुख लक्षण बताइए?
प्रश्न③ गैसेल शॉफ्ट से आप क्या समझते है? बताइए।
प्रश्न④ गेमिन शॉकट व गैसेट शॉकट मे कोई 4 अंतर बताइए?
प्रश्न⑤ कल्पित समुदाय से क्या अभिप्राय है?
प्रश्न⑥ एंडरसन ने राष्ट्रवादी विचार के बारे मे क्या तर्क दिया? बताइए।
प्रश्न⑦ प्रिंट पूंजीवाद क्या है? समझाइए।
प्रश्न⑧ साझी- संस्कृति से आप क्या समझते हो?
प्रश्न⑨ गेमिन शॉकट व गैसेट शॉकट का वर्गीकरण किसने किया?
प्रश्न⑩ गैसेट शॉकट का प्रतिक क्या है? समझाइए।
प्रश्न⑪ आभासी समाज से आप क्या समझते हो उदाहरण सहित वर्णन कीजिए?

Subject: Very Important Question.

Date: __/__/__

MON TUE WED THR FRI SAT SUN

प्रश्न-1:- समाजदर्शन का मूल उद्देश्य क्या है?

उत्तर समाजशास्त्र के निष्कर्षों का समन्वय सामाजिक आदर्शों और मूल्य की विवेचना समाजशास्त्र की मान्यता का विचार मानव समाज को सर्वांगिण दृष्टि मे विचारना तथा मानव समाज के विविध पक्षों को एकता के सूत्र मे बांधना ही समाज दर्शन के मूल उद्देश्य है?

प्रश्न-2:- दर्शन का अर्थ बताइए?

उत्तर दर्शन व्यक्ति वस्तु उनके लक्ष्य एवं उद्देश्य तथा प्रकृति के बारे मे निरन्तर विचार करता है तथा ईश्वर ब्रमाण्ड एवं आत्मा के रहस्यो व इनके पारस्परिक संबंधो पर प्रकाश डालता है।

प्रश्न-3:- समाज दर्शन के दो पहलु या पक्ष बताइए।

उत्तर समाज दर्शन के दो पहलु है।

(i) ~~समन्वय आत्म~~ समन्वयात्मक अथवा रचनात्मक

(ii) समीक्षात्मक या आलोचनात्मक

(i) समन्वयात्मक / रचनात्मक:- इन पहलुओ के अन्तर्गत समाज दार्शनिक संबंधो के मूल रूप पर मूल्यों की खोज करता है। सामाजिक मूल्य के औचित्य की परख करता है, तथा सामाजिक विज्ञानो द्वारा निकाले गए निष्कर्षों को मानव के चरम लक्ष्य के सन्दर्भ मे देखता है।

Subject

) समीक्षात्मक / आलोचनात्मक :- गिन्सबर्ग के अनुसार- " वह सामाजिक विद्वानों द्वारा प्रयुक्त मौलिक तथ्यों, धारणाओं, मान्यताओं या पूर्व मान्यताओं का विश्लेषण करता है जिस पर वह आधारित है, तथा उनकी अनवर्त रूप से समीक्षात्मक जाँच एवं रचनात्मक व्याख्या करता है

प्रश्न:4 → समाजदर्शन एवं समाजशास्त्र मे अन्तर बताइए
उत्तर समाजशास्त्र के अन्तर्गत सामाजिक क्रियाओं सामाजिक संबंधों इत्यादि के तथ्यों का अध्ययन किया जाता है, इसके विपरीत समाज दर्शन मे मानव संबंधों के मूल्यों का अध्ययन किया जाता है।

प्रश्न-5:- औपचारिक रूप से भारत मे समाजशास्त्र का प्रारम्भ कब से माना जाता है।
उत्तर 1914 ~~1919~~ मे

प्रश्न-6 :- इण्डियन सोशियोलॉजी सोशायटि की स्थापना किसने की
उत्तर जी. एस. घुर्ये

प्रश्न-7:- सोशियोलोजि शब्द किन दो शब्दो से मिलकर बना है।
उत्तर पहला शब्द - "सोशीयस लैटिन भाषा का है जिसका अर्थ समाज है, दूसरा शब्द लोगस (logas) ग्रीक भाषा से लिया गया है। जिसका अर्थ है शास्त्र)

Subject ____________ Date : __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

प्र०7:- समाजशास्त्र के प्रथम भारतीय विद्वान कौन है।
उत्तर - प्रो० राधाकमल मुखर्जी (R.A मुखर्जी)

प्रश्न-8:- "Heart is sociology" (हॉर्ट इज सोशियोलोजी) के लेखक कौन है?
उत्तर एलेक्स इंकल्स

प्रश्न 9:- राधाकमल मुखर्जी की दो पुस्तकों के नाम लिखिए
उत्तर (i) सोशियल इकोलॉजी
(ii) दि सोशियल स्ट्रक्चर ऑफ ~~कम्यूल्स~~ वेल्यूज

प्रश्न-10:- डॉ० D.P. मुखर्जी की कोई दो पुस्तकों के नाम बताइए।
उत्तर (i) दि फिलोसफी ऑफ सोशियल साइन्स
(ii) दि डायवर्सिटीज

प्रश्न-11:- भारत मे समाजशास्त्र के विकास की दो प्रवृतियाँ बताइए।
उत्तर (i) पाश्चात परम्पराओ से प्रभावित
(ii) परम्परागत भारतीय चिन्तन से प्रभावित

प्रश्न-12:- समाजशास्त्र के विकास की प्रथम अवस्था कहा से प्रारम्भ ~~हुआ~~ हुई।
उत्तर यूरोप

प्रश्न-13: सर्वप्रथम अमेरिका के कौनसे विश्वविद्यालय मे समाजशास्त्र का अध्ययन प्रारम्भ हुआ।
उत्तर अमेरिका के येल विश्वविद्यालय मे।

Subject

प्रश्न-14 आगस्त कॉम्टे के समाज से संबंधित अध्ययन को सर्वप्रथम किस नाम से जाना जाता है

उत्तर सामाजिक भौतिकी (social physics)

Imp
प्रश्न: 15- इंग्लैंड को समाज शास्त्र शब्द से किसने परिचित करवाया था

उत्तर सन् 1843 में जॉन स्टुअर्ट मील ने इंग्लैण्ड को समाज शास्त्र शब्द का परिचित करवाया था।

प्रश्न-16 → भारत में सर्वप्रथम किस विश्वविद्यालय मे अंह समाज शास्त्र का अध्ययन प्रारम्भ हुआ।

उत्तर सन् 1914 मे मुम्बई विश्वविद्यालय में।

प्रश्न 17 कब व किसकी अध्यक्षता में मुम्बई विश्व विद्यालय मे समाज शास्त्र की स्थापना हुई।

उत्तर सन् 1919 में ब्रिटीश समाजशास्त्र डॉ• पैट्रिक गेडिस की अध्यक्षता में।

प्रश्न 18 भारत में समाजशास्त्र के विकास की और उद्भव पर टिप्पणी कीजिए।

प्रश्न 19 सामाजिक दर्शनशास्त्र क्या है।

~~उत्तर~~

प्रश्न 20 समाजशास्त्र और सामाजिक मनोविज्ञान मे संबंध बताइए।

प्रश्न 21 समाजशास्त्र के कोई दो उपयोग बताइए।

प्रश्न 22 समाजशास्त्र के कोई दो महत्त्व बताइए।

प्रश्न 23 मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। यह कथन किसने कहा?

उत्तर अरस्तु ने।

Subject ______ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN 1 2 3 4 5 6 7

प्रश्न 24 ऐतिहासिक उपागम की दो विधियां लिखिए।
प्रश्न 25 उद्‌विकास के तीन स्वरूप कौन-कौनसे हैं बताइए।
प्रश्न 26. उपागम किसे कहते हैं? ~~ऐतिहासिक उपागम~~
प्रश्न 27 ऐतिहासिक उपागम की दो विशेषताएं बताइए।
प्रश्न 28 ऐतिहासिक उपागम के स्रोत लिखिए।
प्रश्न 29 ऐतिहासिक अनुसंधान के उद्देश्य बताइए।
प्रश्न 30 ऐतिहासिक अनुसंधान से आप क्या समझते हो।
प्रश्न 31 ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति के कौन-कौनसे चरण है।
प्रश्न 32 ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति के चार महत्व बताइए।
प्रश्न 33 ऐतिहासिक अध्ययन की कोई तीन सीमाएं बताइए।
प्रश्न 34. अनुभाविक अनुसंधान पद्धति से क्या तात्पर्य है?
प्रश्न → अनुभाविक अनुसंधान पद्धति की दो सकारात्मक तथा दो नकारात्मक मान्यताएं बताइए।
प्रश्न 35. अनुभाविक अनुसंधान पद्धति की चार सीमाएं / आलोचनाएं बताइए।
प्रश्न 36. अनुभाविक अनुसंधान के प्रमुख गुण क्या है बताइए।
प्रश्न 37. समाज शास्त्र में तुलनात्मक पद्धति क्या है।
प्रश्न 38. तुलनात्मक पद्धति की चार विशेषताएं तथा चार अवगुण बताइए।
प्रश्न 39. समाज का अर्थ बताइए।
प्रश्न 40. "समाज, सामाजिक संबंधों का ताना बाना है" यह कथन किसने दिया।
प्रश्न 41. किंग्सले डेविस ने समाज के कौन-कौनसे कार्य बताए है।
प्रश्न 42. समाज कितने प्रकार का होता है।
प्रश्न 43. सामाजिक संबंधों के आधार पर समाज और एक समाज में अन्तर बताइए।

Subject

MON TUE WED THR FRI SAT SUN

प्रश्न ४४. परम्परागत समाज किसे कहते है।

प्रश्न ४५ मुक्त समाज से क्या अभिप्राय है।

प्रश्न ४६ आदिम समाज को समझाइए।

प्रश्न ४७ सभ्य समाज, सरल समाज और जटिल समाज को परिभाषित कीजिए।

प्रश्न ४८. - समुदाय को परिभाषित कीजिए।

प्रश्न ४९. सामुदायिक भावना से आप क्या समझते है।

प्रश्न 50. सोशियोलोजी और ह्यूमन सोसायटि के लेखक कौन है बताइए

उत्तर - ग्रिन - और - डासन और गेटिस -

लेखक - सोशियोलोजी ह्यूमन सोसायटि

प्रश्न 51. समाज और समुदाय में अन्तर बताइए।

प्रश्न 52. ~~जैमिन~~ गेमिन शाफ्ट और गेसेल शाफ्ट को समझाइए।

प्रश्न 53.